

ISP-92

Tarkib-e-Namaz

તરકીબે નમાઝ

અહમિયત, તરકીબ ઓર મસાઈલ

• મુરત્તિબ •

મૌલાના હબીબુર્રહમાન શેખ

• સાબિક અમીરે હલ્કા, ગુજરાત •

ફેહરિસ્ત

૧. નમાઝ

- નમાઝ
- નમાઝકી અહમિયત
- નમાઝકે ફાયદે
- નમાઝસે કુલ્વત
- હકીકી નમાઝ
- નમાઝ કિન પર ફર્જ હૈ ?

૨. પાકીકા બયાન

- ગુસ્લકા બયાન
- વુઝૂકા બયાન
- તયમ્મુમકા બયાન

૩. તરકીબે નમાઝ

- અઝાનકા બયાન
- નમાઝકા બયાન
- નમાઝકી શર્તે
- નમાઝકે અરકાન

- વાજિબાતે નમાઝ
- નમાઝકી સુન્નતેં
- મુફસિદાતે નમાઝ
- મકરૂહાતે નમાઝ
- નમાઝકે અવકાત
- નમાઝ પઢનેકા તરીકા-તરકીબ
- સજ્દએ સહ્વકા બયાન
- વિત્રકી નમાઝ
- નમાઝે તરાવીહ
- બીમારકી નમાઝ
- મુસાફિરકી નમાઝ
- જુમ્આકી નમાઝ
- ઈદૈનકી નમાઝ
- જનાઝેકી નમાઝ

૪. મસ્નૂન દુઆઓં

पेश लइल

नमाज दीनका सबसे अहम और बुनियादी सुतून है. नमाज मर्दें मो'मिनको बुराईयोसे बचाती है और नेकियों पर यलनेवाला बनाती है. नमाज मो'मिनको अल्लाहका मुबलिस और महबूब बंदा बनाती है. नमाज ही से मुश्किलातमें सभ्र व ईस्तिकामत हासिल होते हैं और यह हकीकत किताब व सुन्नतसे वाजेह है.

यह अेक हकीकत है के जे नमाजें हम पढते हैं उनसे हम कम झयदे हासिल करते हैं, जिसका नतीजा यह है के हम सीरत व किरदार के ईस्लामी मे'यार पर पूरे उतरनेमें नाकाम रहते हैं. हम आजमाईशों और मुश्किलातमें साबित कदमीका सुभूत नहीं दे पाते, नमाजको हमारी जिंदगीमें वह मुकाम-जगह- हासिल नहीं होता जे मुकाम मो'मिनकी जिंदगीमें नमाजका होना चाहिये.

उम्मेते मुस्लिमा (यंद् अफ़राहको छोड कर) ईकामते सलातसे गइलत भरत रही है जिसका नतीजा यह निकल रहा है के ईस्लामका निजामे तरबियत दरहम-बरहम (बिभरना) हो कर रह गया है ! अेक अरसेसे ईस बातकी ज़रूरत महसूस की जा रही थी के दीने ईस्लाममें नमाजको जे मुकाम हासिल है उसकी अहमियत मुसलमानोंको बताते, ईस कीमती दौलतको आम करते और ईस पर अमल करनेके लिये अेक अैसी किताब आसान उर्दू ज़बान और गुजराती उर्दूमें लिपी जाती जिसके ज़रीअे नमाजके बारेमें ज़रूरी मा'लूमात अेक ही जगह और अेक ही किताबमें हासिल हो जाये. हम ईस बात पर खुदाका शुक्र अदा करते हैं के ईस कमीको पूरा करनेकी सआदत हमें नसीब हुई है.

ੳਸ ਕ੍ਰਿਤਾਬਮੇਂ ੲੀਨਮੇਂ ਨਮਾਜ਼ਕੀ ਅਛਮਿਯਤ, ੳਸਕਾ ਮੁਕਾਮ ੳਰ ੳਸਕੀ
 ਜੜ੍ਹਰਤ ਪਰ ਰੋਸ਼ਨੀ ਡਾਲਨੇਕੇ ਸਾਥ ੲੀ ਸਾਥ ਨਮਾਜ਼ਕੇ ਜੜ੍ਹਰੀ ਮਸਾਓਲ ਪਰ
 ਆਸਾਨ ਜਬਾਨਮੇਂ ਰੋਸ਼ਨੀ ਡਾਲੀ ਗਓ ੲੈ. ੳਰ ਆਖਿਰਮੇਂ ਜੜ੍ਹਰੀ ਮਸਨੂਨ
 ਦੁਆਅੇ ੲੀ ਸ਼ਾਮਿਲ ਕਰ ੲੀ ਗਓ ੲੈ. ੳਸ ਕ੍ਰਿਤਾਬਸੇ ਕਮ ਪਢੇ-ਲਿਖੇ ਅਵਾਮ,
 ਤਲਯਾ, ਤਾਲਿਯਾਤ, ੲੀਨਕਾ ਕਾਮ ਕਰਨੇਵਾਲੇ, ਮਦ੍ਰਸੋਂਮੇਂ ਪਢਾਨੇਵਾਲੇ ਅਸਾਤਿਜ਼ਾ
 ੳਰ ਅਓੰਮਅੇ ਮਸਾਯਿਦ ਸਯ ੲੀ ਝਾਯਦਾ ੳਠਾ ਸਕਤੇ ੲੈ. ੳਸ ਕ੍ਰਿਤਾਬਕੀ
 ਮੁਰਤਬ ਕਰਨੇਮੇਂ ਮੁਹੰਮਦ ੳਭੈਦੁਲਲਾਛਯਾਂ ਜੁਠਾਨੇ ਕਾਝੀ ਤਆਵੁਨ ਕ੍ਰਿਯਾ ੲੈ
 ੳਸਕੇ ਲਿਯੇ ੲਮ ੳਨਕੇ ਮਸ਼ਕੂਰ ੲੈ.

ਅਲਲਾਛ ਤਆਲਾਸੇ ਦੁਆ ੲੈ ਕੇ ਵਛ ੲਮਾਰੀ ੳਸ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ਕੀ ਕਭੂਲਿਯਤਕਾ
 ਦਰਜ਼ ਅਤਾ ਝਰਮਾਅੇ ੳਰ ਆਮ ਮੁਸਲਮਾਨੋਂਕੀ ੳਸਸੇ ੳਸਤੇਝਾਟੇ (ਝਾਯਦਾ
 ੳਠਾਨੇ) ਕੀ ਤੌਝੀਕ ਅਤਾ ਝਰਮਾਅੇ ੳਰ ੲਮਾਰੀ ਕੋਤਾਛਿਯੋਂਕੀ ਮੁਆਝ ਝਰਮਾਅੇ,
 ਆਮੀਨ. (ਮੇ, ੧੮੮੩)

ਤਾਲਿਯੇ ਦੁਆ,

ਹਭੀਭੁਰ੍ਹਮਾਠ ਸ਼ੋਯ

૧. નમાઝ

- નમાઝ
- નમાઝકી અહમિયત
- નમાઝકે ફાયદે
- નમાઝસે કુવ્વત
- હકીકી નમાઝ
- નમાઝ કિન પર ફર્જ હૈ ?

नमाज :

ईस्लामने जो ईबादतें हम पर ईर्ज की हैं उनमें नमाज सबसे जयादा अहम है, यह अेक ऐसी ईबादत है जो किसी हालतमें छोडी नहीं जा सकती. ईन्सानकी पूरी जिंदगीको अल्लाहकी ईबादत बनानेमें नमाज सबसे जयादा असर डालनेवाली है. नमाज ईन्सानमें ये सलाहियत और ताकत पेदा करती है के वह हर वकत यह बात याद रहे के वह अल्लाहका बंदा है. उसे अपनी यह हैसियत हर वकत याद रहे के में अल्लाहका पेदाईशी गुलाम हूं और उसने मुझे अपनी बंदगीके लिये पेदा किया है और ईसलिये मेरे लिये जरूरी है के मेरी सारी जिंदगी अल्लाहकी ईबादतमें गुजरे. कभी अेक पलके लिये भी में उसकी ईबादतसे गाइल न रहूं.

ईस सिलसिलेमें सबसे पेहली बात तो यह है कि आप किसी भी वकत ईस बातको न भूलें के आप भुदाके बंदे हैं और अेक पलके लिये भी यह बात आपके हिमागसे ओजल न होने पाये के आपको हर हालमें उसीकी मरजीके मुताबिक जिंदगी गुजारनी है.

ईन्सानके साथ उसका नफ्स लगा हुआ है. उसके अंदर कई किस्मकी ज्वालिशात रम दी गई हैं और शयतान हर वकत ईस घातमें लगा रहता है के कब उसका दाव चले और वह ईन्सानको अल्लाहकी बंदगीके रास्तेसे हटा दे. ईस लिये ईस बातकी सफ्त जरूरत है के ईन्सानको दिनमें कई बार यह याद दिलाया जाय के तू भुदाका बंदा है, तुझे उसीकी मरजी पर चलना है.

यही काम नमाज करती है, सुबह उठते ही सबसे पेहले वह यही बात याद दिलाती है. ईस तरह बंदे घंटोंके बाद फिर यही सबक पढाया जाता है, और थोडे थोडे वकतके बाद रात होने तक तीन बार इसी बातकी याद दिलाई जाती है. नमाज आपके अंदर जिम्मेदारीका ओहसास

पेदा करती है, नमाज आपको इर्ज-शनास बनाती है, वह आपमें यह आदत पेदा करती है के आप अपने इर्ज को पेहचानें और उसे पूरा करनेके लिये पूरी दिलचस्पीके साथ तैयार रहें.

नमाज दिनमें पांच वकत अपने वकत पर आपको अल्लाहके दरबारमें छाजरीके लिये पुकारती है. अगर आप इस पुकारको सुन कर कौरन उठ जाते हों, हर कामको छोड कर नमाजकी तरफ लपकें, तो इससे यह मा'लूम हो जायेगा के आप अल्लाह तआलाकी ईताअत और इरमांवरदारीके लिये पूरी तरह तैयार हैं और अपना इर्ज पेहचानते हैं.

नमाज आपके अंदर अल्लाहका डर पेदा करती है. जब तक मुसलमानके दिलमें अल्लाहका भौंक न हो उस वकत तक वह ईस्लामके मुताबिक जिंदगी नहीं गुजार सकता. अल्लाहका डर मुसलमानको भुले और छुपे हर हालमें अल्लाहकी नाइरमानीसे रोकता है. जब तक मुसलमानको यह यकीन न हो के अल्लाह उसे देख रहा है और उसके दिलके भयालोंको भी जानता है उस वकत तक वह अल्लाहकी नाइरमानीसे नहीं बच सकता. अल्लाह पर यही ईमान एक मुसलमानको हर वकत हलाल और हराममें तमीज कराता है. रोजाना पांच वकतकी नमाज मुसलमानके अंदर इसी यकीनको पेदा करती है. वह जब नमाज पढता है तो उसको इस बातका यकीन होता है के अल्लाह उसको देख रहा है.

नमाज मुसलमानको भुदाकी ईताअत और इरमांवरदारी पर कायम राखती है. मुसलमानके अंदर शुक्र और भुदाकी ता'रीफ और उसके ईन्आमोंका ओहसास पेदा करती है. नमाज ईन्सानके अंदर अल्लाहसे मुहब्बत और इरमांवरदारीके जलजात पेदा करती है. नमाज शुक्र और ओहसानमंदीकी मुकम्मल तसवीर है. नमाजसे पेदा होनेवाली ईन सिफातको सामने रखिये और फिर कैसला कीजिये के अगर आप वाकई यह चाहते हैं के दुनियामें अल्लाहके बंदे बन कर रहें और आपकी पूरी जिंदगी ईबातदत बन जाये तो आप नमाजके बगैर ये भूबियां (सिफात)

अपने अंदर कैसे पेदा कर सकते हैं ? नमाज ईन्सानको अल्लाहकी इरमांभरदारीके रास्ते पर कायम रअती है.

नमाजकी अहमियत :

ईस्लामी जिंदगी गुजारनेके लिये और दीनके तकाजोंको पूरा करनेके लिये आपको जिस ताकतकी जरूरत है उसे हासिल करनेका जरीआ-साधन नमाज है. ईमानके ईकरारके बाद सबसे पेहली जिम्मेदारी जो अेक मुसलमान पर आती है वह नमाजका कायम करना है. मुसलमान ईस जिम्मेदारीसे किसी वकत और किसी हालमें मुंड नहीं मोड सकता. ईस्लाममें किसी दूसरे कामको वह अहमियत हासिल नहीं है जो नमाजकी है. कुअनिपाकमें नमाजकी ताकीद और जिक जिस कसरतसे (बार बार) हुआ है उतना जिक किसी दूसरी ईबादतका नहीं हुआ. यह भी आपने सुना होगा के क्यामतके दिन जब अंदे अपने मालिकके सामने अपने हिसाब-किताबके लिये अडे हांगे तब सबसे पेहले उनसे नमाजके बारेमें पूछ-परछ होगी. कुअनिपाकमें अेक जगह अल्लाह तआलाने यह नकशा ईस तरह पेश इरमाया है के जब अेहले ईमान क्यामतके दिन अल्लाहके बागियोंको अजाबमें मुब्तेला देभेंगे तो उनसे पूछेंगे के बताओ तो सही ईस मुसीबतमें कैसे इंस गये और तुम्हारे वह आ'माल क्या थे जो तुम्हें दोजभमें ले आये. तो उस वकत वह लोग जो जवाब देंगे उसमें हम सबके लिये ईभरत व नसीहतका सामान भौजूद है. वह सबसे पेहले अपने जिस संगीन जुर्मका जिक करेंगे, वह नमाज न पढना होगा, वह कहेंगे, 'हम नमाज नहीं पढते थे, मोहताजोंको पाना नहीं पिलाते थे, हुजूल बातोंमें उलजे रहनेवालोंके साथ हम भी उलजे रहते थे, और क्यामतके दिनका ईन्कार करते थे.' ईससे अंदाजा लगाईअे के नमाज न पढना अल्लाहके यहां कितना बडा जुर्म शुमार होगा. असल बात यह है के ईस्लाममें नमाजकी जो अहमियत हासिल है वह आजकल हमारे जेहनोंसे तकरीबन निकल चुकी है, हालांके ईस्लामने नमाजको मुसलमान

और काफ़िर के दरमियान पेहचान करार दिया है. यही वजह है के क्यामतमें काफ़िरोका अंजाम भयान करते हुअे सबसे पेहले यह बात कही गई है के वल नमाज़ नहीं पढते थे. नबीअे करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमने नमाज़को ईमान और कुफ़के दरम्यान इर्क करनेवाली चीज़ इरमाया है. उअरत ज़ाबिर रदियल्लाहु तआला अन्हु इरमाते हैं के मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमको ईशाद इरमाते सुना है के, 'ईन्न भयन-र-रजुलि व भयन-श-शिरूकि वल कुफ़ि तरकस्सलात' (सहीह मुस्लिम - ८२). या'नी नमाज़ छोड देने के बाद अेक शप्स जिस मुकाम तक पहोंच जाता है उसमें और कुफ़ व शिर्कके मुकाममें कोई इर्क नहीं रह जाता और ईस तरह नमाज़ छोड देनेवाला अमलन काफ़िरो जैसा हो जाता है. उअरत बुरैदा रदियल्लाहु तआला अन्हुने इरमाया है के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमने ईशाद इरमाया के: भयनना व भयनहुमुस्सलाता इमन तरकहा इकद कइरा (ज़ाअे तिमिज़ी- २६२१) (या'नी हमारे और काफ़िरोके दरम्यान इर्क करनेवाली चीज़ नमाज़ है, तो जिसने नमाज़ छोड दी उसने कुफ़का तरीका ईप्तियार किया.)

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमके ज़मानेमें मुसलमान यह सोच ली नहीं सकते थे के वल नमाज़ न पढें यहां तक के जो लोग दिल्से ईमान नहीं लाते थे और किसी दबाव, लालच या किसी और गरजसे थूं डी दिभानेके लिये मुसलमान बन गअे थे वल ली पांयों वकत नमाज़के लिये मस्जिदमें आते थे. इर्क यह था के "और जब ये नमाज़के लिये उठते हैं तो कस-मसाते हुअे महज़ लोगोंको दिभानेकी भातिर उठते हैं और भुदाको कम ही याद करते हैं." (सूर: निसा - १४२)

उअरत ईबने मसूजिद रदि. इरमाते हैं के अेक मरतबा मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमसे पूछा के नेक आ'मालमें सबसे ग़िया दरज़ा किस अमलका है. तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमने ईशाद इरमाया के वकत पर नमाज़ पढना. ईसके बाद फिर कौनसा अमल है ? तो

ફરમાયા: મા-બાપકે સાથ અચ્છા સુલૂક. ફિર ઉન્હોને પૂછા કે અચ્છા ઈસકે બાદ કિસ અમલકા દરજા હૈ, તો ઈશાદિ ફરમાયા કે, અલ્લાહકી રાહમેં ઉસકે દીનકો ગાલિબ કરનેકે લિયે જાન તોડ કોશિશ કરના. (મિશકાત, અલ મસાબીહ, હદીસ - ૫૬૮)

ઔર ફિર યહ સુનિયે કે નબી સલ્લલ્લાહુ અલૈહિ વસલ્લમને અપની ઉમ્મતકે લિયે વસીયતકે તૌર પર એક આખરી હિદાયત ભી છોડી હૈ.

રિવાયતમેં આતા હૈ કે ઈસ જહાને ફાનીસે રુખસત હોતે હુએ નબીએ કરીમ સલ્લલ્લાહુ અલૈહિ વસલ્લમકી ઝબાન પર જો આખરી અલ્ફાઝ થે વહ યે થે:

“અસ્સલાતુસ્સલાતુ વ મા મલકત અયમાનુકુમુલ્લાહ.” યાની ‘નમાઝ ઔર તુમ્હારે લોંડી - ગુલામ.’ (સહીહુલ જામેઅ - ૩૮૭૩)

સુની આપને અપને પ્યારે રસૂલ સલ્લલ્લાહુ અલૈહિ વસલ્લમકી આખરી વસીયત ? ઈસ વસીયતકી મૌજૂદગીમેં ઈસ બાતકી કયા ગુંજાઈશ હૈ કે કોઈ શખ્સ નમાઝ ન પઢતે હુએ અપને આપકો રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહુ અલૈહિ વસલ્લમકી ઉમ્મતમેં શુમાર કરે, યા નબીએ કરીમ સલ્લલ્લાહુ અલૈહિ વસલ્લમસે મુહબ્બતકા દમ ભરે, હુઝૂર સલ્લલ્લાહુ અલૈહિ વસલ્લમકે નામ પર સીરત ઔર મીલાદકે જલ્સે કરે. સોચના યાહિયે કે ઐસે લોગ કયામત કે દિન પ્યારે રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહુ અલૈહિ વસલ્લમકો કયા મુંહ ટિખાએંગે.

નમાઝકે ફાયદે :

અલ્લાહ તઆલાને ઈશાદિ ફરમાયા કે ઈન્નસ્સલાત તન્હા અનિલ ફહશાઈ વલ મુન્કર (સૂર: અન્કબૂત - ૪૫) (બેશક નમાઝ ગંદે ઔર બુરે કામોંસે રોકતી હૈ). નમાઝકે બહોતસે ફાયદોંમેં સે એક બડા અહમ ફાયદા

यह है के नमाज ही वह जरीआ है जिससे ईन्सान बुराईयोंसे बच सकता है. अफ्लाकी बुराईयोंसे पाक होना यूं भी ईन्सानके लिये बडोत ठीकी बात है, और कौन ऐसा होगा जो ईसकी प्वाछिश न करे. क्यों के यही तो अेक चीज है जो ईन्सानको दुनिया और आभिरत दोनों जगह फायदा पडोयाती है. लेकिन ईसका अेक और जबरदस्त फायदा भी है और वह यह के अगर वाकई कुछ लोगोंके अफ्लाक पाकीजा हो जाअें और उनके किरदार बुराईयोंसे पाक हो जाअें तो अैसे लोगों पर जबरदस्त भरतरी छापिल हो जाती है जो तरह-तरहकी अफ्लाकी बुराईयोंमें मुत्तला हों. दीनकी सरबुलंदीकी राहमें यही अफ्लाकी भरतरीका वो पेहला जीना (सीढी) है जिस पर चढना अेहले हकके लिये जरूरी है. और ईसके बगैर दीनको सरबुलंद करनेकी कोशिशोंकी इन्तिदा ही नहीं होती.

असल बात यह है के जहां तक बुराईयोंसे रोकनेका ता'ल्लुक है तो नमाज लाजिमन यह काम करती है. आप अगर नमाजकी नोईयत पर जरा सा भी गौर करेंगे तो यह तस्लीम कर लेंगे के ईन्सानको बुराईयोंसे रोकनेके लिये जितने मुअस्सिर-असरदार तरीके मुमकिन हैं उनमें सबसे जयादा कारगर और मुअस्सिर जरीआ नमाज ही हो सकता है. तला सोचिये तो सही के जब आदमीको हर रोज पांच-पांच बार फुदाकी यादके लिये बुलाया जाअे और उसके जहनमें यह बात ताजा की जाय के तू ईस दुनियामें फुदमुप्तार और आजाह नहीं है बल्के तू फुदाका बंदा है और तूने उसकी बंदगीका ईकरार किया है और तेरा फुदा वह है जो तेरे फुले और छुपे हर कामको देख रहा है. यहां तक के वह तेरे दिलके ईरादों और नीयत तकको जानता है. और देख अेक अैसा वक्त आनेवाला है जब तुजे उस फुदाके सामने छाजिर होना पडेगा. और अपने अेक-अेक कामकी जवाबदेही करना होगी. तो फिर यह कैसे हो सकता है के अैसा शप्स जान-बूझ कर गलत राहों पर चले. यूं गलती किससे नहीं हो जाती, लेकिन गलती हो जाना और बात है और गलती करते रहेना

દૂસરી બાત છે. ફિર નમાઝકાં કામ ઈતના હી તો નહીં કે વહ ઈન બાતોંકો સિફ યાદ દિલાતી હો, બલ્કે નમાઝમેં તો હર શખ્સસે મશક-(પ્રેક્ટિસ) ભી કરાઈ જાતી હૈ કે વહ છુપકર ભી અપને ખુદાકે કિસી હુકમકી ખિલાફવરઝી ન કરે. નમાઝકે લિયે ઉઠનેકે વકતસે લેકર નમાઝ ખત્મ કરને તક હર આદમીકો લગાતાર એસે કામ કરને પડતે હૈ જિનમેં ઉસકે ઔર ખુદાકે સિવા કોઈ તીસરી હસ્તી યે જાનનેવાલી નહીં હોતી કે ઉસ શખ્સને ખુદાકે કાનૂનકી પાબંદી કી હૈ યા ઉસે તોડ દિયા હૈ.

અબ રહા યે સવાલ કે આદમી નમાઝ ભી પઢતા રેહતા હૈ ઔર અમલન બુરાઈયોંસે રુકતા ભી નહીં. તો દરઅસલ બુરાઈયોંસે બચનેકા ઈન્હિસાર (આધાર) ખુદ ઉસ આદમી પર હૈ જો ખુદ નમાઝ પઢતા હૈ. પેહલી બાત યહ કે નમાઝસે ફાયદા ઉઠાનેકે લિયે ઝરૂરી હૈ કે આદમી પેહલે યહ ઈરાદા તો કરે કે મુઝે બુરાઈયોંસે બચના હૈ. જબ તક ઈન્સાન ખુદ નમાઝસે ફાયદા ઉઠાનેકી નીચ્ચત નહીં કરેગા ઉસ વકત તક ઉસ પર નમાઝકે વહ અસરાત નહીં પડેંગે જિનકી તરફ અલ્લાહકે ઈર્શાદમેં ઈશારા ક્રિયા ગયા હૈ.

નમાઝસે કુવ્વત :

નમાઝકી જો અહમિયત દીનમેં હૈ ઔર જિસકી તફસીલાત ઉપર બયાન હુઈ હૈ ઈસકા સહી અંદાઝા ઉસ વકત હોતા હૈ જબ આપ યહ મેહસૂસ કર સકે કે અલ્લાહ તઆલાને કિસ તરહ નમાઝકો મો'મિનકે લિયે કુવ્વતકા એક બડા ખઝાના બનાયા હૈ. અગર બાત સિફ ઈતની હોતી કે કુછ લોગ દૂસરોંકી પૂજાપાઠ છોડકર અલ્લાહકી પરસ્તિશ કરને લગે. ઔર તન્હાઈયોંમેં બેઠકર અલ્લાહકો યાદ કરતે રહેં તો યહ મુઆમ્લા કુછ ઝયાદા મુશ્કિલ ન થા. ઈસ તરહ અલ્લાહકો પૂજ લેનેકી ઈજાઝત બલ્કે સહૂલત તો હર કાફિરાના નિઝામમેં મિલ હી જાતી હૈ. લેકિન આપ જાન ચુકે હૈ કે ઈસ્લામ ઈસ તરહકા કોઈ મઝહબ નહીં હૈ જો ઈન્સાનકી મહઝ ઈન્ફિરાદી-

व्यक्तिगत जिंदगीसे मुतअद्विक हो बलके ईस्लामकी पुसूसियत ही यह है के वल पूरी जिंदगीको अपने दायरेमें लेता है. अस यही अक कठिन बात है; ईसीकी वजहसे कश्मकश शुरू होती है और मो'मिनको नित-नई मुश्किलातका सामना करना पडता है. क्यों के वक्तका छाया हुआ निजाम ईन्सानी जिंदगीके बडे हिस्सेको अपनी मरजी और प्वाइशके मुताबिक चलाना चाहता है और वल ईसे पसंद नहीं करता के ईन्सानी जिंदगीके आम मुआम्लातमें उसकी मरजीके खिलाफ किसी औरकी मरजी चले, युनांचे वल हर उस आवाजको दबा देना चाहता है जिसकी जद्द उसके ईकतिदार-सत्ता पर पडे. अब अगर मो'मिन ईस कैसले पर कायम रेहना चाहता है के उसकी पूरी जिंदगी अल्लाहकी ईताअतमें बसर हो तो उसे वक्त की इन कुव्वतोसे टक्कर लेना पडती है और अब मो'मिनको उससे मुकाबलेके लिये ताकत और कुव्वतकी जरूरत होती है.

कुआनिपाकके मुतालआसे साफ-साफ ये मालूम होता है के आं हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपके साथियोंको जब भी मुश्किल हालात दरपेश आये तो ताकीद नमाज कायम करनेकी ही की गई. सूर: अनूकभूत जिस जमानेमें नाजिल हुई है वल वक्त मुसलमानोंके लिये बहोत सप्त था. दीन पर कायम रेहना उनके लिये निहायत मुश्किल काम हो गया था. पानदानवाले अलग दबाव देते और सोसायटी-समाजके लोग अलग सताते थे. गरज यह के तरह तरहकी लालच दी जाती थी. और तरह तरहसे सताया जाता था. अगर आप ईस सूर: का मुतालआ करेंगे तो पेहले ही रुकूअमें उन मुश्किलातका नकशा आपके सामने आ जायेगा. उस जमानेमें ओहले ईमान पर जो जुल्म व सितम तोडे जा रहे थे उनके होते मुसलमानोंका ईमान पर कायम रेहना बहोत मुश्किल काम हो गया था. उस मौके पर अल्लाह तआलाने कुव्वत हासिल करनेके लिये जो प्रैक्टिकल तदबीर अताई वल यही है के (हे नबी ! तिलावत करो उस किताबकी जो तुम्हारी तरफ वल (वही) के ऊरीये लेख गई है, और नमाज कायम करो.) कुआनिपाककी तिलावत और नमाजका

कायम करना ही वह दो चीजें हैं जो ओक मो'मिनमें वह ताकत पैदा करती हैं जिसके बल पर वो बातिलके बडेसे बडे तूफानोंके मुकाबलेमें भडा रह सकता है. बडे तूफानका रुप मोड सकता है. यह बात आप समजते ही हैं के तिलावते कुआनिपाक और नमाजसे यह ताकत उसी वकत हासिल हो सकती है जब के कुआनिके महज अल्फाज जभानसे अदा कर लेनेको काफ़ी न समजें बडे वह कुआनिकी ता'लीमातको ठीक-ठीक समजकर उसके बताये हुअे सांयोंमें अपनी जिंदगीको ढालते रहे जअें. और इसी तरह नमाज बदनकी कुछ हरकत और जभानसे कुछ अल्फाज अदा कर लेनेका नाम न हो बडे नमाज उसके अखलाक व किरदारको नये सांयोंमें ढाल दे और नमाज उसके अंदर हरकत और अमलके लिये ओक नई कुव्वत पैदा कर दे.

इसी तरह सूर: बनीईस्त्राईल जिस जमानमें नाजिल हुई वह मक्की जिंदगीका आभरी दौर था. मुसलमानों पर मुसीबतोंके पहाड तोडे जा रहे थे और दुश्मनोंने यह तय कर लिया था के जिस तरह भी हो आं उजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमको कत्ल कर दिया जाअे और इस तरह इस उबरती हुई ताकतको हमेशाके लिये दबा दिया जाअे. युनांये इसी सूर: में अल्लाह तआलाने ओक जगह फरमाया है के 'यह लोग इस बात पर तुले हैं के तुम्हारे कदम इस सरजमीनसे उभाड दें और तुम्हें यहांसे निकाल दें.' (सूर: बनीईस्त्राईल - ७६) इन सप्त हालातमें अल्लाह तआलाने यही हिदायत दी के 'नमाज कायम करो, सूरजके ढलनेसे लेकर रातके अंधेरे तक और सुबहका कुआन पढना जरूरी ठेहरा लो और इसके डौरन बाह तहज्जुदकी नमाजकी तरफ़ मुतवज्जअ किया गया है. इससे साफ़ मा'लूम होता है के मुश्किल हालातमें नमाज कायम करनेसे ही मो'मिनको कुव्वत हासिल हो सकती है. यह दो नमूने तो मिसालके तौर पर पेश किये हैं, वरना कुआनिमें हर जगह आप देखेंगे के आइतों और मुश्किलोंमें नमाजसे कुव्वत हासिल करनेकी तल्कीन बार-बार की गई है. हकीकत यह है के मो'मिनके लिये नमाज कुव्वतका भजाना

है और मुश्किलातके हुजूममें हक पर जमे रहेनेके लिये यही अक कारगर तदबीर है. अलबत्ता यह अच्छी तरह समज लेना चाहिये के याहे नमाजसे मिलनेवाले फायदे हों या उससे हासिल होनेवाली कुव्वत, धनमेंसे हर शप्सको उतना ही हिस्सा मिलता है जितना उसकी नमाज, हकीकी नमाज होती है.

हकीकी नमाज :

हकीकी नमाज किसे कहते हैं यह बात समज लेना चाहिये. कुआनिपाकमें जितनी जगह नमाजका जिक्र हुआ है वहां अल्लाहतआलाने नमाज कायम करनेका हुकूम दिया है. नमाज पढनेका लक्ज कुआनिमें किसी जगह नहीं आया है. नमाज कायम करनेके लिये दो चीजें जरूरी हैं: अक नमाजकी जाहिरि शकल और दूसरी नमाज पढनेवालेकी दिली कैफियत. जाहिरि शकलमें जो बातें शामिल हैं वह कुछ इस तरह हैं जैसे, नमाज वक्त पर पढी जाय, रूप डिब्बेकी तरफ हो, नमाजके कपडे और नमाज पढनेकी जगह पाक हो, पुजू कर लिया गया हो, जब आदमी नमाज पढने षडा हो जाये तो धर-धर न देभे, नजरें सजदेकी जगह पर रहे, रुकूअ और सुजूद धत्मीनानके साथ और उस तरीके पर करे जो शरीअतने मुकरर कर दिया है. और नमाजमें कोई औसी हरकत न करे जिसके करनेकी मु'मानिअत (मना) है, और मर्दोंके लिये जरूरी है के वह नमाज जमाअतके साथ मस्जिदमें अदा करें.

दूसरी चीज जो नमाज कायम करनेके लिये जरूरी है वह धन्सानकी दिली कैफियत है. आदमीकी पूरी कोशिश यह होनी चाहिये के नमाजके वक्त उसका दिल जुदाकी तरफ मुतवज्ज हो और जो कुछ वह लभानसे केह रहा हो वही दिलसे भी अर्ज करे. दिलकी इस कैफियतकी नमाज पुशूअ है. पुशूअके असल मा'नी हैं 'किसीके आगे रुक जाना, दभ जाना, आजिजी और धन्किसारीका धजहार करना.' इस कैफियतका

તા'લ્લુક દિલસે હૈ. ઈસકા મતલબ યહ હૈ કે નમાઝ પઢનેવાલેકા દિલ અલ્લાહતઆલાકી હૈબત ઓર અઝમત વ જલાલસે મરઝીબ હો. ઈસ કેફિયતકો પૈદા કરનેકે લિયે કોશિશ કરની પડતી હૈ ઓર નમાઝકે ઉન તમામ ઝાહિરી (જો નઝર આતે હો) આદાબકા લિહાઝ કરના પડતા હૈ જિનકા ઝિક ઉપર હુવા હૈ. કોશિશ કરના યાહિયે કે આદમી જાન-બૂઝકર નમાઝમેં ગૈર મુતા'લ્લિક બાતેં ન સોયે ઓર બિલા ઈરાદા જો ખ્યાલાત દિલમેં આમેં ઉન્હેં પૂરી કોશિશકે સાથ દિલસે દૂર ક્રિયે જાએં.

નમાઝ કિન પર ફર્જ હૈ ?

હર આકિલ-વ-બાલિગ મુસલમાન પર નમાઝ ફર્જ હૈ. હઝરત આયશા સિદ્દીકા રદિ. ફરમાતી હૈં કે રસૂલુલ્લાહ સલ્લલ્લાહુ અલૈહિ વસલ્લમને ફરમાયા: તીન આદમીસે બાઝપુર્સ નહીં. એક, સોયા હુવા આદમી યહાં તક કે વહ બેદાર હો જાએ. દૂસરા, બર્યા યહાં તક કે વહ બાલિગ હો જાએ. તીસરા, પાગલ યહાં તકકે વો બાહોશ હો જાએ. (અહમદ, અબૂ દાઉદ, તિર્મિઝી, નસાઈ, ઈબને માજહ, હાકિમ)

બર્યે પર નમાઝ ફર્જ નહીં હૈ, લેકિના વાલિદૈનકો યાહિયે કે જબ વો સાત સાલ કા હો જાએ તો ઉસે નમાઝકા હુકમ દે. જબ દસ સાલકા હો જાએ તો મારેં ઓર દૂસરે મુઅસ્સિર તરીકે અપનાએ. નબી સલ્લલ્લાહુ અલૈહિ વસલ્લમને ફરમાયા હૈ કે 'તુમહારે બર્યે સાત સાલ કે હો જાએ તો ઉન્હેં નમાઝકા હુકમ દો ઓર જબ દસ સાલ કે હો જાએ તો ઉન્હેં મારો ઓર ઉન્કે સોનેકી જગહ અલગ કર દો. (મુસ્નદ અહમદ - ૧૦૮૪, અબૂ દાઉદ, હાકિમ)

૨. પાકીકા બયાન

- ગુસ્લકા બયાન
- વુઝૂકા બયાન
- તયમ્મુમકા બયાન

अल्लाह तआलाके नेक बंदे वह हैं जो भूब पाक-साफ़ रहते हैं. पाकी और सफ़ाईको तहारत कहते हैं. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमने इरमाया है के 'पाकी आधा ईमान है. (सहीह मुस्लिम - पउ४) दूसरी जगह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमका ईशाद है के 'जन्तकी कुंज नमाज़ है' और नमाज़की कुंज पाकी और सफ़ाई है. (मिशकत अल मसाबीह - पपप).

मुसलमान हर तरहकी नापाकीसे दूर रहता है. वह अपने ज़ाहिरको भी पाक रખता है और बातिनको भी. ज़ाहिरकी पाकी तो यह है के वह अपना जिस्म, अपने कपडे, रहनेकी जगह और हर चीज़को पाक-साफ़ रखे. बातिनकी पाकी यह है के वह कुछ व शिर्ककी बातोंसे अपने दिलको पाक रખता है, बुरे प्यालात दिलमें नहीं लाता, जूट, गीबत और बेशरमीकी बातोंसे बयता है. दिलमें दुश्मनी और कीना नहीं रખता, धमंड नहीं करता. अल्लाहको एक मानता है. हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमकी लाई हुई शरीअत पर पूरा पूरा अमल करता है. अल्लाहके बंदोंके साथ मुहब्बत करता है, गर्ज उसका जिस्म भी और उसका दिल भी हर किस्मकी नापाकीसे पाक रहता है.

नापाकीको नज़सत भी कहते हैं. नज़सत दो तरह की होती है: नज़सते हुकमी और नज़सते हकीकी.

नज़सते हुकमी :

वह नापाकी जो देजनेमें नहीं आती बल्के हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमके अतानेसे मालूम हुई है जैसे कोई शय्स बेवुजू हो तो वुजू किये बगैर नमाज़ नहीं पढ सकता. शरीअतकी नज़रमें उसे पाकी हासिल नहीं है. पेशाब-पापाना करना, रियाह खारिज होना, भून या पीपका अदनसे निकलना, टेक लगाकर सो जाना, भुंछ लर कर के (उल्टी)

હો જાના, યે સબ સૂરતેં નજાસતે- હુકમીકી હેં. નજાસતે હુકમી વુઝૂ કરનેસે દૂર હો જાતી હેં.

નજાસતે હકીકી :

વો નાપાકી જો આંખો સે દેખી જા સકતી હેં ઓર જિસસે ઇન્સાનકો કુદરતી તૌર પર ઘિન આતી હે ઓર અપને આપકો ઉસસે બચાતા હે. ઇસકી દો કિસ્મેં હેં: (૧) નજાસતે ગલીઝા (૨) નજાસતે ખફીફા

નજાસતે ગલીઝા :

નજાસતે ગલીઝા યા'ની સખત નાપાકી. ઇસકા હુકમ ભી સખત હે જેસે ઇન્સાનોંકા પેશાબ-પાખાના, ઇન્સાનોં ઓર જાનવરોંકા ખૂન, ઘોડે-ગધેકી લીદ, કુત્તે-બિલ્લીકા પાખાના, શરાબ વગૈરહ. સુવ્વરકી તો હર ચીઝ નજાસતે ગલીઝા હે. અગર યહ ચીઝેં કપડે, બદન, ટેબલ, કુર્સી, પલંગ ઓર ખાટ પર લગ જાએ તો તીન બાર ધોના ઝરૂરી હે, ખાસ તૌર પર જિસ જગહ નજાસત લગી હો તો ઉસકો ઇસ તરહ રગડ-રગડ કર ધોના ચાહિયે કે દાગ-ધબ્બા ન રહે.

નજાસતે ખફીફા :

નજાસતે ખફીફા યા'ની વહ નાપાકી જો નજાસતે ગલીઝાસે ઝરા હલ્કી હો, ઇસકા હુકમ ભી નર્મ હે. હલાલ જાનવરોંકા પેશાબ, હરામ પરિંદોંકી બીટ વગૈરહ અગર યહ બદન વગૈરહ પર યા કપડે પર લગ જાએ ઓર ચોથે હિસ્સે સે કમ પર લગે તો નમાઝ હો જાએગી લેકિન મકરૂહ હોગી. ઇસ લિયે બેહતર યહી હે કે નજાસતે ખફીફાકે મુઆમલેમેં એહતિયાત રખના ચાહિયે ઓર જહાં તક હો સકે અપને બદન ઓર કપડોંકો નજાસતે ખફીફાસે ભી પાક ઓર સાફ રખે.

ઇસ્તિજા :

પાખાના ઔર પેશાબકે બાદ પાકી હાસિલ કરનેકો ઇસ્તિજા કહતે હૈં. પેશાબ યા પાખાનેસે ફારિગ હો કર પેહલે ઢેલે ઇસ્તેમાલ કરને ચાહિયેં ઔર ફિર પાનીસે ધો ડાલના ચાહિયે. અગર મિટ્ટીકે ઢેલે ન મિલેં તો ઇંટકે ટુકડોંકો ઇસ્તેમાલ કિયા જા સકતા હૈં. હડી, કોયલા, ગોબર, કાગઝ ઔર ખાનેકી ચીઝોંસે ઇસ્તિજા નહીં કરના ચાહિયે. ઇસ્તિજા બાયેં (ડાબા) હાથસે કરના ચાહિયે.

ગુસ્લકા બયાન :

ગુસ્લકા મતલબ નહાના હૈં, મગર નહાનેકા શરીઅતમેં એક ખાસ તરીકા હૈં. ગુસ્લકા તરીકા યહ હૈં કે પેહલે દોનોં હાથ ધો કર ઇસ્તિજા કરે ઔર બદનસે હકીકી નજાસત ધો ડાલે. ફિર વુઝૂ કરે, ફિર તમામ બદન પર પાની ડાલ કર હાથસે યા સાબુન લગા કર મલે. ફિર સારે બદન પર તીન મરતબા પાની બહાએ. કુલ્લી કરે ઔર નાંકમેં પાની ડાલે.

બેહતર યહી હૈં કે ગુસ્લ હમ્મામ યા ગુસ્લખાનેમેં કિયા જાએ. હમ્મામ યા ગુસ્લખાનેમેં પૂરે કપડે ઉતાર કર નહાયા જા સકતા હૈં, લેકિન હમ્મામ કા ઇન્તેઝામ ન હો તો ફિર નાફસે ઘુટનોં તક કપડા બાંધકર નહાના ચાહિયે.

ઝયાદા પાની બહાના, સત્ર ખુલા હોનેકી સૂરતમેં બાતચીત કરના યા કિબ્લેકી તરફ મુંહ કરના ઔર સુન્નાતકે ખિલાફ ગુસ્લ કરના મકરૂહ હૈં.

ગુસ્લ કબ વાજિબ હોતા હૈં ?

(૧) સોતે યા જાગતેમેં જબ જવાનીકે જોશકે સાથ મની નિકલ આયે, જિસે એહતેલામ કેહતે હૈં, તો ગુસ્લ વાજિબ હો જાતા હૈં.

(२) जब मर्दकी पेशाबगाहका अगला हिस्सा जिसे सुपारी कहते हैं औरतकी शर्मगाहमें दाखिल हो जाये और छुप जाये तो गुस्ल वाजिब हो जाता है याहे मनी निकले या न निकले.

(३) औरतोंको जो पून हर महीने शर्मगाहसे आता है उसे डैज कहते हैं, जब ये पून आना बंद हो जाये तो गुस्ल करना वाजिब है.

(४) औरतको बर्या पैदा होनेके बाद जो पून आता है उसको निफ़ास कहते हैं, उसके बंध होने पर गुस्ल करना वाजिब है.

नोट: सोनेके बाद आंघ्रि खुली और कपडे या बदन पर मनी लगी हुई हो तो भी गुस्ल वाजिब हो जाता है याहे कोई भवाब देखा हो या न देखा हो.

गुस्लके इरादत :

- (१) कुल्ली करना
- (२) नाकमें पानी डालना
- (३) तमाम बदन पर पानी डालना

गुस्लमें पांच सुन्नतें हैं :

- (१) दोनों हाथ गङ्गों तक धोना
- (२) इस्तिंजा करना और जिस जगह नजासत लगी हो उसको धोना
- (३) नापाकी दूर करनेकी नीयत करना
- (४) पेहले पुजू करना
- (५) पूरे बदन पर तीन बार पानी बहाना

વુઝૂકા બયાન :

જબ નમાઝ પઢનેકા ઈરાદા કર લે તો સાફ બર્તનમેં પાક પાની લેકર પેહલે ગઢ્ઠોં તક હાથ ધોએ, ફિર તીન બાર કુલ્લી કરે, મિસ્વાક કરે, ફિર તીન બાર નાકમેં પાની ડાલે ઓર નાક સાફ કરે, તીન બાર મુંહ ધોએ, ફિર કોહનિયોં તક દોનોં હાથ ધોએ, ફિર સર ઓર કાનોંકા મસહ કરે, ફિર દોનોં પાંવ ટખનોં તક ધોએ.

વુઝૂમેં ચાર ફર્મ હેં :

(૧) પેશાનીકે બાલોંસે ઠોડીકે નીચે તક ઓર એક કાનસે દૂસરે કાન તક મુંહ ધોના

(૨) દોનોં હાથોંકો કોહનિયોં સમેત ધોના

(૩) ચોથાઈ સરકા મસહ કરના

(૪) દોનોં પાંવ ટખને સમેત ધોના

વુઝૂમેં તેરહ સુન્નતેં હેં :

(૧) નીચ્ચત કરના

(૨) બિસ્મિલ્લાહ પઢના

(૩) પેહલે તીન બાર દોનોં હાથ ગઢ્ઠોં તક ધોના

(૪) મિસ્વાક કરના

(૫) તીન બાર કુલ્લી કરના

(૬) તીન બાર નાકમેં પાની ડાલના

-
- (७) दाढीका जिलाल करना
 - (८) हाथ- पांवकी उंगलियोंका जिलाल करना
 - (९) हर उज्वको तीन बार धोना
 - (१०) एक बार पूरे सरका मसह करना यानी लीगा हुवा हाथ डेरना
 - (११) दोनों कानोंका मसह करना
 - (१२) तरतीबसे पुजू करना
 - (१३) पै हर पै पुजू करना के एक उज्व सूखने न पाये के दूसरा धोये

पुज्जमें पांच बातें मुस्तहब हैं :

- (१) दाओं तरफसे शुद्ध करना
- (२) गर्दनका मसह करना
- (३) दूसरेकी मददके बगैर खुद पुजू करना
- (४) डिब्बेकी तरफ मुंह करके बैठना
- (५) पाक और ठीकी जगह पर बैठ कर पुजू करना

पुज्जमें चार चीजें मकरह हैं :

- (१) नापाक जगह पर पुजू करना
- (२) सीधे हाथसे नाक साफ करना
- (३) पुजू करनेमें दुनियाकी बातें करना
- (४) सुन्नतके जिलाफ पुजू करना

આઠ બાતોંસે વુઝૂ ટૂટ જાતા હૈ :

- (૧) પાખાના યા પેશાબ કરના
- (૨) રિયાહકા ખારિજ હોના
- (૩) બદનકે કિસી હિસ્સેસે પીપ યા ખૂનકા નિકલ કર બેહ જાના
- (૪) મુંહ ભર કર કે (ઉલ્ટી) કરના
- (૫) લેટ કર યા સહારા લેકર સો જાના
- (૬) બીમારી યા કિસી દૂસરી વજહસે બેહોશ હો જાના
- (૭) દીવાના હો જાના
- (૮) નમાઝમેં કેહ-કહા માર કર યા'ની ઝોર સે હંસના

તયમ્મુમકા બયાન :

પાક મિટ્ટીસે બદનકો નજાસતે હુકમિયહસે પાક કરનેકો તયમ્મુમ કહતે હૈં.

જબ પાની ન મિલે યા પાની ઈસ્તેમાલ કરનેસે બીમાર હો જાને યા બીમારી બઢ જાનેકા ખતરા હો તો બજાએ ગુસ્લ યા વુઝૂકે તયમ્મુમ કરના જાઈઝ હૈ. મિસાલકે તૌર પર પાની એક યા દો મીલ દૂર હો, યા કિસી દુશ્મનકે ખતરેકી વજહસે અપની જાનકા ખતરા હો યા પાની મિલનેકી જગહ પર સાંપ યા શેર યા કોઈ દૂસરા ખતરનાક દુશ્મન મોજૂદ હો ઔર ઉનકી મૌજૂદગીસે જાનકા ખતરા હો, યા કૂવા તો હૈ લેકિન ડોલ ઔર રસ્સી નહીં હૈ, યા પાની ઉસકે પાસ ઈતના કમ હૈ કે અગર વુઝૂ યા ગુસ્લમેં ખર્ચ કર દિયા તો ઉસકે ખ્યાસે મરનેકા ડર હો તો ઈન સૂરતોંમેં બિલા શક તયમ્મુમ કર સકતા હૈ.

પાનીકે ઈસ્તેમાલસે મામૂલી બીમારીકા ખતરા હો તો તયમ્મુમ જાઈઝ નહીં હૈ અલબત્તા ખતરનાક બીમારીકા અંદેશા હો ઔર મશહૂર હકીમ યા ડાકટર પાનીકે ઈસ્તેમાલસે મના કરે તબ હી તયમ્મુમ કરના ચાહિયે.

તયમ્મુમમેં તીન ફર્ઝ હૈ :

(૧) નીચ્ચત કરના

(૨) દોનોં હાથ મિટ્ટી પર માર કર મુંહ પર ફેરના

(૩) દોનોં હાથ મિટ્ટી પર માર કર દોનોં હાથોંકો કોહનિયોં તક મલના (મિટ્ટીકા સાફ હોના ઝરૂરી હૈ)

તયમ્મુમકા તરીકા યહ હૈ :

પેહલે નીચ્ચત કરે કે મેં નાપાકી દૂર કરને ઔર નમાઝ પઢનેકે લિયે તયમ્મુમ કરતા હૂં. ફિર દોનોં હાથ મિટ્ટીકે બડે ઢેલે પર માર કર ઉન્હેં ઝાડ દે, ઝયાદા મિટ્ટી લગ જાએ તો મુંહસે ફૂંક દે ઔર દોનોં હાથોંકો મુંહ પર ઈસ તરહ મલે કે કોઈ જગહ બાકી ન રહે. એક બાલ બરાબર ભી જગહ છૂટ જાએ તો તયમ્મુમ નહીં હોગા. ફિર દૂસરી મરતબા દોનોં હાથ મિટ્ટી પર મારે ઔર ઉસે ઝાડ કર કોહનિયોં તક હાથ ફેરે ઔર ઉંગલિયોંકા ખિલાલ ભી ઝરૂરી હૈ.

પાક મિટ્ટી, રેત, પથ્થર, ચૂના ઔર મિટ્ટીકે કચ્ચે યા પક્કે બરતન જિન પર રોગન યા પોલિશ ન હો, મિટ્ટી કી કચ્ચી યા પક્કી ઈંટ, મિટ્ટી, પથ્થર ઔર ચૂનેકી દીવાર પર તયમ્મુમ કરના જાઈઝ હૈ.

લકડી, લોહા, સોના, ચાંદી, તાંબા, પીતલ, એલ્યુમિનિયમ, શીશા, રાંગ, જસત, ગેહૂં, જવ ઔર તમામ કિસ્મકે અનાજ કપડે, રાખ વગૈરહ પર તયમ્મુમ જાઈઝ નહીં હૈ.

૩. તરફીબે નમાઝ

૧. અઝાનકા બયાન
૨. નમાઝકા બયાન
૩. નમાઝકી શર્ત
૪. નમાઝકે અરકાન
૫. વાજિબાતે નમાઝ
૬. નમાઝકી સુન્નતે
૭. મુફસિદાતે નમાઝ
૮. મકરૂહાતે નમાઝ
૯. નમાઝકે અવકાત
૧૦. નમાઝ પઢનેકા તરીકા-તરફીબ

સજ્દાએ સહવકા બયાન

વિત્રકી નમાઝ

નમાઝે તરાવીહ

બીમારકી નમાઝ

મુસાફિરકી નમાઝ

જુમ્આકી નમાઝ

ઈદેનકી નમાઝ

જનાઝેકી નમાઝ

૧. અઝાનકા બચાન :

અઝાનકે મા'ની ખબર કરનેકે હેં, લેકિન શરીઅતમેં ફર્જ નમાઝોંકે લિયે જો ખાસ અલફાઝ ખબર કરનેકે લિયે પુકારે જાતે હેં ઉસે અઝાન કહા જાતા હૈ.

અઝાનસે ઈસ્લામકી એક ખાસ શાન ઝાંહિર હોતી હૈ ઈસ લિયે ઈસકી બહોત ઝયાદા તાકીદ હૈ.

પાંચોં ફર્જ નમાઝોં ઔર જુમ્આકી નમાઝકે લિયે અઝાન મસ્નૂન હૈ, ઈસકે અલાવા ઔર કિસી નમાઝકે લિયે અઝાન મસ્નૂન નહીં.

હર ફર્જ નમાઝકી અઝાન ઉસકે વકતમેં કેહની ચાહિયે.

અઝાનકે અલ્ફાઝ યહ હેં :

અલ્લાહુ અકબર

اللَّهُ أَكْبَرُ

(ચાર બાર પુકારેં)

અશ્હદુઅલ્લ લા ઈલાહ ઈલ્લલ્લાહ

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ

(દો બાર પુકારેં)

અશ્હદુઅન્ના મુહમ્મદર

أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ

રસૂલુલ્લાહ

(દો બાર પુકારેં)

હેયા અલસ્સલાહ

حَيَّ عَلَى الصَّلَاةِ

(દો બાર પુકારેં)

હેયા અલલ ફલાહ

حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ

(દો બાર પુકારેં)

અલ્લાહુ અકબર

اللَّهُ أَكْبَرُ

(દો બાર પુકારેં)

લા ઈલાહ ઈલ્લલ્લાહ

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ

નોટ: ફજાકી નમાઝકે લિયે જો અઝાન પુકારી જાતી હૈં ઉસમેં હૈયા અલલ ફલાહકે બાદ

અસ્સલાતુ ખૈરુમ મિનન નૌમ **الصَّلَاةُ خَيْرٌ مِنَ النَّوْمِ**

(નમાઝ નીદસે બેહતર હૈં) (દો બાર પુકારેં)

અઝાનકે બાદ યે દુઆ પઢની ચાહિયે :

اللَّهُمَّ رَبِّ هَذِهِ الدَّعْوَةِ التَّامَّةِ وَالصَّلَاةِ

الْقَائِمَةِ ابْنَ مُحَمَّدٍ الْوَسِيلَةَ وَالْفَضِيلَةَ

وَابْعَثْهُ مَقَامًا مَحْبُودًا الَّذِي وَعَدْتَهُ.

إِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيعَادَ

અલ્લાહુમ્મ રબ્બ હાઝિહિદ દ'અવતિત્ તામ્મતિ વસ્સલાતિલ કાઈમતિ આતિ મુહમ્મદ નિલવસીલત વલ ફઝીલત વબ્બઅસહુ મકામમ મહમૂદ નિલ્લઝી વ અદ્દતહુ ઈન્નક લા તુખ્લિફુલ મીઆદ.

૨. નમાઝકા બયાન :

ચોબીસ ઘંટોં મેં પાંચ નમાઝેં ફર્જ હેં. ઈનકો છોડનેવાલા સખ ગુનેહગાર, ફાસિક ઔર ફાજિર હે ઔર ઈનકી ફરજિયતકા ઈન્કાર કરનેવાલા કાફિર હે.

‘ફતવા એ આલમગીરી’મેં હે કે જો શખ્સ નમાઝકી ફરજિયતકા ઈન્કાર નહીં કરતા લેકિન જાનબૂઝ કર નમાઝ છોડ દેતા હે ઉસકો કતલ ન કરેં બલકે કેદ કર દે, યહાં તક કે વહ તૌબા કરે.

પાંચ નમાઝેં હર મુસલમાન, બાલિગ, મર્દ ઔર ઔરત પર ફર્જ હેં ફજ, ઝુહર, અસર, મગરિબ, ઈશા.

૩. નમાઝકી શર્તે :

નમાઝ સહી ઔર મુકમ્મલ હોનેકે લિયે સાત શર્તે હેં. અગર ઈનમેંસે એક ભી શર્ત પૂરી ન હુઈ તો નમાઝ ન હોગી. વહ શર્તે યહ હેં :

૧. બદનકા પાક હોના ઔર ગુસ્લકી ઝરૂરત હો તો ગુસ્લ કરના ઔર વુઝૂકી ઝરૂરત હો તો વુઝૂ કરના

૨. કપડોંકા પાક હોના

૩. નમાઝકી જગહકા પાક હોના

૪. સત્રકા છુપાના

૫. નમાઝકા વક્ત હોના

૬. કિબલેકી તરફ મુંહ હોના

૭. નીચ્ચત કરના

૧. બદનકે પાક હોનેસે મુરાદ યહ હે કે અગર ગુસ્લ વાજિબ હો તો ગુસ્લ કરે. બદન પર કિસી જગહ નાપાકી લગી હો તો ઉસકો ધો કર સાફ

करे और वुजू करे.

२. नमाजकी दूसरी शर्त यह है के कपडे पाक हों, अगर कोई शप्स बिला उज्जर नापाक कपडोंसे नमाज पढेगा तो नमाज न होगी और गुन्हेगार होगा. कपडोंसे मुराद वही कपडे हैं जिनको पहनकर नमाज पढी जाती है जैसे कमीज, कुर्ता, पाजामा, पेन्ट, लुंगी, दुपट्टा, शेरवानी, कोट, अमामा वगैरह.... इनमेंसे किसी पर अगर एक छिद्रहम (एक रुपिया कलदार) के बराबर या उससे ज्यादा नजासत लगी हो तो कपडेका पाक करना जरूरी है.

नजासते भझीका व कपडेके योथाई छिस्से या उससे ज्यादा पर हो तो उनका पाक करना भी जरूरी है.

३. जगहके पाक होनेका ये मतलब है के जिस जगह नमाज पढी जाये उस जगहका पाक होना जरूरी है, जैसे तप्त, जलनामाज और वह कपडा जिस पर नमाज पढी जाये.

४. सत्रके छुपानेसे मुराद यह है के मर्दको नाफसे घुटनों तक अपना बदन छुपाना फर्ज है. यह औसा फर्ज है के नमाजके अंदर भी फर्ज है और नमाजके बाहर भी फर्ज है. कुछ लोग जो नीकर या यडी पहन कर बाहर फिरते हैं गुनाह है. औरतको सिवाय दौनों हथेलियों, पांव और मुंडके, पूरे बदनका ढांकना फर्ज है. अगरये औरतको नमाजमें में मुंड छुपाना फर्ज नहीं है लेकिन गेरमर्दोंके सामने बेपरदा आना भी जाईज नहीं है.

५. नमाज पढनेके लिये यह शर्त है के जो वक्त इसके लिये मुकरर किया गया है उसी वक्तमें पढी जाये. वक्तसे पहले पढेगा तो नमाज नहीं होगी, वक्तके बाद पढनेसे अदा नहीं बल्के कजा होगी. जैसे लुहरका वक्त बाकी है और अझका वक्त नहीं हुवा और किसीने लुहरके वक्त ही में अझकी नमाज पढ ली तो अझकी नमाज न होगी. या लुहरका वक्त गुजर गया और अझका वक्त शुरु हो गया और किसीने लुहरकी नमाज

न पढी तो पेहले जुहरकी नमाज कजा पढ ले फिर अझकी नमाज बाजमाअत पढे. तंग वकतमें नमाज पढना मकरुह है.

६. ईसको ईस्तिक्बाले किब्ला भी केहते हैं, ईसका मतलब ये है के नमाज पढनेवालेका मुंह किब्लेकी तरफ हो. मुसलमानोंका किब्ला पानअे का'बा कभरेकी शकलका अेक घर है के जो मुळे अरबके मशहूर शहेर मक्का मुअज्जामामें वाकेअ है. पानअे का'बाको का'बतुल्लाह, बयतुल्लाह और बयतुलहराम भी केहते हैं.

उमारे मुल्क हिंदुस्तान, बर्मा, पाकिस्तान और दूसरे बहुतसे मुल्कोंमें किबला मजिबकी तरफ है.

ईर्ज और नइल नमाजें, ईईनकी नमाजें, जनाजेकी नमाज और सज्दअे तिलावत किबलेकी तरफ मुंह डिये बगैर जाईज नहीं.

७. नीयत हिलसे ईरादेको केहते हैं, मिसालके तौर पर इजकी नमाज पढनी है तो ये नीयत करे के आजकी नमाजे इज पढता हूं. कजा नमाज हो तो ईस तरह नीयत करे के इलां दिनकी नमाजे इज पढता हूं. अगर ईमामके पीछे नमाज पढता हो तो उसकी नीयत भी जरुरी है. नइल नमाज, सुन्नत नमाज और तरावीहके लिये भी नीयत करना जरुरी है. नीयत अगर जबानसे न कहे तो नीयत हो जाअेगी लेकिन जबानसे केहना मुस्तहब है.

४. नमाजके अरकान :

अरकाने नमाज उन चीजोंको केहते हैं जो नमाजके अंदर ईर्ज हैं. अरकान रुकूनकी जमा है, रुकूनके मा'नी ईर्जके और अरकानका मतलब इराईज हैं.

नमाजके अंदर छ बातें ईर्ज हैं :

(१) तकबीरे तहरीमा केहना

(२) कयाम या'नी भडा होना

(३) किर्तत यानी कुअनि भज्जदमेंसे कुछ पढना

(४) रुकूअ करना

(५) दीनों सज्दे करना

(६) कायदअे अजीरह

(१) तकबीरे तहरीमाका यह मतलब है के नीयत बांधते वक्त अल्लाहु अकबर कहे. इस तकबीरके केहनेसे नमाज शुरू हो जाती है और जो भाते नमाजके भिलाइ हैं; जैसे के यलना-फिरना, भाना-पीना और बातचीत करना वगेरह सब कुछ हराम हो जाता है, इसको तकबीरे तहरीमा केहते हैं. तकबीरे तहरीमा केहते वक्त इर्ज और वाजिब नमाजोंमें जब के कोई उर्र न हो सीधा भडा होना इर्ज है.

(२) कयाम भडे होनेको केहते हैं और भडे होनेसे ऐसा सीधा भडा होना मुराद है के घुटनों तक हाथ न पहोंय सकें.

इर्ज और वाजिब नमाजोंमें इतना भडा होना इर्ज है जिसमें इतना कुअनि पढ लिया जाअे जितना के नमाजमें पढना इर्ज है.

नइल नमाजें बैठ कर पढी जा सकती हैं. बीमारीकी हालतमें जम्मी होनेकी हालतमें और भडे होनेकी ताकत न हो तब नमाज बैठकर भी पढी जा सकती है.

(३) नमाजमें कुअनिभज्जद पढनेको किर्तत केहते हैं. कम अज कम अेक आयत पढना इर्ज है. सूर: फातिहा पढना, वाजिब है. इर्जकी पेहली और दूसरी रकूअतों और नमाजे वित्रमें, सुन्नत और नइलकी तमाम रकूअतोंमें सूर: फातिहाके बाद कोई और सूरत या अेक बडी आयत या कमसे कम तीन छोटी आयतोंका पढना वाजिब है.

ફર્જ નમાઝકી તીસરી રક્ઝત ઓર ચોથી રક્ઝતકે અલાવા સુન્નત, વિત્ર ઓર નફ્લકી હર રક્ઝતમેં સૂરઃ ફાતિહાકે બાદ કુર્આનકા પઢના ફર્જ હૈ.

(૪) રુક્ઝ, નમાઝમેં ઇસ કદર ઝુકનેકો કેહતે હૈં કે હાથ ઘુટનોં તક પહોંચ જાએ. રુક્ઝકા મરનૂન તરીકા યહ હૈં કે ઇતના ઝુકા જાએ કે સર ઓર કમર બરાબર રહેં ઓર હાથ પસલિયોંસે અલગ રહેં. ઓર ઘુટનોંકો દોનોં હાથોંસે પકડ લિયા જાએ. બુઢાપેકી વજહસે કમર ઇસ કદર ઝુક જાએ યા બહુત ઝયાદા કુબડા હો કે રુક્ઝકી શકલમેં હર વકત માલૂમ હોતા હો તો વો સર કે ઇશારેસે યા સરકો ઝુકા કર રુક્ઝ કરે.

(૫) ઝમીન પર પેશાની રખનેકો સજદહ કેહતે હૈં. હર રક્ઝતમેં દોનોં સજદે ફર્જ હૈં. અગર પેશાની ઓર નાક દોનોં પર ઝખ્મ હોં તો ઐસે ઇન્સાનકો સરકે ઇશારેસે સજદહ કર લેના ચાહિયે.

એક સજદહકે બાદ દૂસરા સજદહ કરનેસે પેહલે અચ્છી તરહ સીધા હોકર બેઠે ઓર ફિર દૂસરા સજદહ કરે.

(૬) કઅંદએ અખીરામેં અત્તહિયાતકે આખરી લફ્ઝ અબ્દુહુ વ રસૂલુહ તક પઢનેકી મિકદાર બૈઠના ફર્જ હૈં.

કઅંદએ અખીરા તમામ નમાઝોંમેં ચાહે ફર્જ હોં, વાજિબ હોં સુન્નત હોં યા નફ્લ ફર્જ હૈં.

૫. વાજિબાતે નમાઝ :

વાજિબાતે નમાઝ ઉન બાતોંકો કેહતે હૈં જિનકા નમાઝમેં અદા કરના ઝરૂરી હૈં. અગર ઇનમેંસે કોઈ ચીઝ ભૂલસે છૂટ જાએ તો સજદએ સહ્વ કર લેનેસે નમાઝ દુરુસ્ત હો જાતી હૈં, ઓર ભૂલેસે છૂટનેકે બાદ સજદએ સહ્વ ન કિયા જાએ યા જાનબૂઝ કર કોઈ બાત છોડ દી જાએ તો નમાઝકા ટૂટના વાજિબ હો જાતા હૈં.

वाजिभाते नमाज योदह हैं :

(१) इर्ज नमाजकी पेहली दो रक़अतें डिर्अतके लिये मुकरर करना.

(२) इर्ज नमाजोंकी तीसरी और योथी रक़अतमें सिर्फ़ सूरः फ़ातिहा पढना, लेकिन सुन्नत, वाजिब और नफ़ल नमाजकी तमाम रक़अतोंमें सूरः फ़ातिहाके बाद कोई सूरः या बडी आयत या कमसे कम तीन छोटी आयतोंका पढना.

(३) सूरः फ़ातिहाको सूरः से पेहले पढना.

(४) डिर्अत और रुक़ूअमें और सजदों और रक़अतोंमें तरतीब कायम रਖना.

(५) कोमा करना या'नी रुक़ूअसे उठकर सीधा खडा होना.

(६) जल्सा यानी दोनों सजदोंके दरम्यानमें सीधा बैठ जाना.

(७) तअदीले अरकान या'नी रुक़ूअ, सजदह वगैरहको धल्मीनानसे अच्छी तरह अदा करना.

(८) कअ्दअे उिला या'नी तीन या चार रक़अतवाली नमाजोंमें दो रक़अतोंके बाद तशद्दुहकी मिकदार बैठना.

(९) दोनों कअ्दोमें तशद्दुह पढना.

(१०) धमामको नमाजे इज्ज, मगरिब, धशा, जुम्आ, धदैन, तरावीह और रमजानुल मुबारकके वित्रोंमें आवाजसे डिर्अत करना और लुहर और अझकी नमाजोंमें आहिस्ता पढना.

(११) लइज़ सलामके साथ नमाजको खत्म करना.

(१२) नमाजे वित्रमें कुनूतके लिये तकबीर केहना और दुआअे कुनूत पढना.

(१३) दोनों धदैनकी नमाजोंमें अर्ध तकबीरें केहना.

६. नमाज़की सुन्नतों :

जो रीज़ें नमाज़में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमसे साबित हुँ हैं लेकिन उनकी ताकीद फ़र्ज और वाज़िबके बराबर साबित नहीं हुँ उन्हें सुन्नत केहते हैं, इन रीज़ोंमें कोई रीज़ अगर भूलेसे छूट जाये तो न नमाज़ टूटती है न सज़्दअे सड़व वाज़िब होता है, न गुनाह होता है. और जानबूझकर छोड देनेसे नमाज़ तो नहीं टूटती और न ही सज़्दअे सड़व वाज़िब होता है लेकिन छोडनेवाला मलामतका मुस्ताहिक होता है.

नमाज़में यह सुन्नतें हैं :

- (१) तकबीरे तेहरीमा केहनेसे पेहले दोनों हाथ कानों तक उठाना
- (२) दोनों हाथोंकी उंगलियां अपने हाथ पर भुली रखना और किब्ला रुख रखना.
- (३) तकबीर केहते वक़्त सरको न झुकाना.
- (४) इमामका तकबीरे तेहरीमा और अेक रुक़्नसे दूसरे रुक़्नमें जानेकी तमाम तकबीरें भुलन्द आवाज़से केहना.
- (५) सीधे हाथको बायें हाथ पर नाइके नीचे बांधना.
- (६) सना पढना.
- (७) अउज़ुबिल्लाह पढना.
- (८) बिस्मिल्लाह पढना.
- (९) फ़र्ज नमाज़की तीसरी और चोथी रक़्अतमें सिर्फ़ सूर: फ़ातिहा पढना, आमीन केहना.
- (१०) सना, तअव्वुज़ और बिस्मिल्लाह और आमीन सबको पढना.

(११) सुन्नतके मुताबिक किरात करना या'नी जिस जिस नमाजमें जिस कदर कुआनिमज्जद पढना सुन्नत है उसके मुताबिक पढना.

(१२) रुकूअ और सजदेमें तीन तीन बार तस्बीह पढना.

(१३) रुकूअमें जुकने और घुटनों पर हाथ रफनेसे इर्ज अदा हो जाता है. सुन्नत यह है के रुकूअमें कमर सीधी हो, न नीचेकी तरफ़ जुकी हुई, न तो उपर उठी हुई. हाथ घुटनों पर रफते वक्त कोहनियोंको बदनसे दूर रफें और घुटनों पर उंगलियां फोल कर रफें.

(१४) कोमामें धामाको समिअल्लाहुलिमन हमिदह और मुक्तदीको रफबना लकलहम्द केहना और मुर्रिदकी (अकेले नमाज पढनेवाला) दोनों केहना.

(१५) सजदेमें जाते वक्त पेहले दोनों घुटने, फिर दोनों हाथ, फिर पेशानी जमीन पर रफना. सजदेसे उठते वक्त पेहले हाथ जमीनसे उठाना, फिर घुटने उठाना. सजदेमें (१) बाजूओंको पेहलूओंसे दूर रफें. (२) कोहनियोंको उठाये रफें (कुत्तेकी तरह हाथ न फेलायें) (३) उंगलियां मिली हुई रफें (४) दोनों हाथ मूढे और कानोंके बराबर रफें. (५) हाथ और पांवकी उंगलियोंको डिब्ला रुफ रफें. (६) पेटको रानोंसे दूर रफें (औरत) रानों ओर पेट की मिलायें.

(१६) जल्सा और कअदेमें बांया पांव बिछा कर उस पर बेठना और सीधे पांवको धस तरह फडा रफना के उसकी उंगलियोंके सिरे डिबलेकी तरफ़ रहें और दोनों हाथ दोनों रानोंको मिलाकर बांये पांवको दायी रानके नीचे रफें.

(१७) तशहूहुदमें 'अशहदु अल् ला ईलाह' पर कलमेकी उंगली उठायें और 'ईल्लल्लाह' पर रफ लें.

(१८) कअदेअे अभीरा तशहूहुदके बाद हुइद पढना.

(१९) हुइदके बाद हुआ पढना.

(२०) पेहले दाओं तरफ़ फिर बाओं तरफ़ सलाम ફेरना.

७. मुस्लिमाते नमाज़ :

मुस्लिमाते नमाज़ उन चीज़ोंको केहते हैं जिनसे नमाज़ फ़ासिद हो जाती है या'नी टूट जाती है और उसे लौटाना ज़रूरी हो जाता है.

मुस्लिमाते नमाज़ ये हैं :

(१) नमाज़में बातचीत करना, याहें भूल कर हो या जानबूझ कर, थोडा हो या ज़यादा नमाज़ फ़ासिद हो जाती है.

(२) सलाम करना, सलामका जवाब देना, धींकका जवाब देना, नमाज़से बाहर कोई शप्स हुआ मांग रहा है उसकी हुआ पर आमीन केहना.

(३) किसी बुरी ખबर पर ईन्ना विल्लाह.... केहना या अख़ी ખबर पर सुब्हानव्वाह केहना.

(४) दर्द या रंजकी वजहसे उंहकार भरना.

(५) अपने ईमामके सिवा किसी दूसरेको लुकमा देना.

(६) कुअनिशरीफ़ देख कर पढना.

(७) कुअनिमज्जद पढनेमें सप्त गलती करना.

(८) अमले कसीर करना या'नी कोई ऐसा काम करना जिसकी वजहसे लोग ये समजें के ये ईन्सान नमाज़ नहीं पढ रहा है.

(९) ખाना-पीना याहें भूल कर हो या जानबूझ कर.

(१०) दो सफ़ोंकी भिकदारके बराबर चलना.

(११) डिबलेकी तरफ़से बिला उज़ूर अपना सीना ફेर लेना.

(१२) नांपाक जगह पर सजदह करना.

(१३) सत्र पुल जानेकी सूरतमें अेक रुकनकी मिकदार ठहरना.

(१४) दुआमें ऐसी थीज मांगना जो बंदोंसे मांगी जाती है जैसे अय अल्लाह मुझे आज सो रुपिये दे दे.

(१५) मुसीबतकी वजहसे इस तरह रोना के आवाजमें हुकूम ज़ाहिर होने लगे.

(१६) बालिगका नमाजमें कलकला मार कर या जोरसे हंसना

(१७) इमामसे आगे बढ जाना.

वो थीजें जिनसे नमाज नहीं टूटती :

(१) रोना: अशीय्यते इलाही या बीमारीकी वजहसे अगर रोना आ जाये मगर दो हरफों तकके लिये हो तो.

(२) अंभारना: ज़रत पर अंभार सकतें हैं मगर दो हरफोंसे ज़यादा नहीं.

(३) इस्तिफ़ात (किसी तरफ़ तवज्जोह देना): इर्ज नमाजके अलावा मजबूरी हो तो किया जा सकता है.

(४) सांप, बिच्छु, मध्मी (अंभवाली) और ज़ेहरीले और चुकसानदेह जानवरोंको मार सकते हैं.

(५) सप्त ज़रतके वक्त थोडा सा चलना.

(६) बर्ये या बर्यीको उठाना.

(७) नमाज पढते हुअे कोई ऐसी थीज पेश आये जिस पर टोकना या मुतनब्बेह करना पड़े (इमाम नमाजमें गलती करे) तो मर्द सुब्धान्द्लाह कहें. औरतें दाअें छाथकी उंगलियां बाईं उथेली पर मार कर ताली अज्जअें.

(८) इमाम अगर नमाजमें कुर्आन पढनेमें लूल करे तो लुकमा देना.

(८) जूतेके साथ नमाज पढना, मगर जूते पाक हों.

(१०) हिलमें धर-धरके प्याल आना.

(११) आंभें बंद करना.

(१२) भुशूअ-व-भुजूके लिये नंगे सर नमाज पढना, सुस्तीसे हो तो मकड़ह हैं.

८. मकड़हाते नमाज :

मकड़हाते नमाज यह हैं, धनकी वजहसे नमाज कराहतेके साथ होगी.

(१) सटल या'नी कपडे लटकाना जैसे यादर सर पर डालकर उसके दोनो किनारे लटका देना और शेरवानी या कोट बगैर पहने कंधों पर डालकर लटका लेना.

(२) कपडोंको मिट्टीसे बयानेके लिये मिट्टीको धर-धर करना और कपडे झटकारना.

(३) अपने कपडों या बदनसे भेलना.

(४) मामूली और मेले कपडोंसे नमाज पढना.

(५) मुंडमें रुपिया या पैसा रचना जिसकी वजहसे कुर्आन पढना मुश्किल हो जाये.

(६) सुस्ती और बेपरवाहीकी वजहसे नंगे सर नमाज पढना.

(७) पापाना या पेशाबकी छाजतमें नमाज पढना

(८) बालोंको सरपर रख कर युटिया बांधना जैसे सिप और छिंदु साधु बांध लेते हैं.

(९) कंकरियोंको हटाना; लेकिन अगर सजहद करना मुश्किल हो तो अक भरतबा हटानेमें कोई हरज नहीं है.

(૧૦) ઉંગલિયાં ચટખાના, એક હાથકી ઉંગલિયાં દૂસરે હાથકી ઉંગલિયોંમેં ડાલના, કમર, કૂખ યા કૂલ્હે પર હાથ રખના.

(૧૧) કિબલેકી તરફસે મુંહ ફેર કર યા સિર્ફ આંખોંસે ઈધર-ઉધર દેખના.

(૧૨) કુત્તેકી તરહ બેઠના.

(૧૩) સજદેમેં દોનોં હાથોંકો બિછા લેના મદોંકે લિયે મકરૂહ હે.

(૧૪) કિસી ઐસે આદમીકી તરફ નમાઝ પઢના જો નમાઝીકી તરફ મુંહ કિયે બેઠા હો.

(૧૫) હાથ યા સરકે ઈશારેસે સલામકા જવાબ દેના.

(૧૬) બિલા ઉઝૂર આલતી-પાલતી પલાઠી- મારકર બેઠના.

(૧૭) કસદન જમ્હાઈ (બગાસું ખાવું) લેના.

(૧૮) આંખકો બંદ કરના લેકિન અગર નમાઝમેં દિલ લગાનેકે લિયે બંદ કરે તો મકરૂહ નહીં.

(૧૯) ઈમામકા મેહરાબકે અંદર બેઠના લેકિન અગર પાંવ મેહરાબકે બાહર હોં તો મકરૂહ નહીં.

(૨૦) અકેલે ઈમામકા એક હાથ ઊંચી જગહ પર ખડા હોના લેકિન અગર ઉસકે સાથ કુછ મુક્તદી ભી હોં તો મકરૂહ નહીં.

(૨૧) ઐસી સફકે પીછે ખડે હોના જિસમેં જગહ ખાલી હો.

(૨૨) કિસી જાનદારકી તસવીર વાલે કપડે પેહનકર નમાઝ પઢના.

(૨૩) ઐસી જગહ નમાઝ પઢના કે નમાઝીકે સરકે ઉપર, યા ઉસકી સીધી તરફ, યા ઉલટી તરફ, યા સજદેકી જગહ જાનદારકી તસવીર હો.

(૨૪) આયતેં, સૂરતેં યા તસ્બીહેં ઉંગલિયોં પર શુમાર કરના.

(२५) यादर या कपडा ईस तरह लपेट कर पढना के हाथ जल्दी न निकल सकें.

(२६) नमाज़में अंगड़ाई लेना.

(२७) सुन्नतके खिलाफ़ नमाज़में कोई काम करना.

नमाज़की रक़अतें :

दिन-रातमें पांच नमाज़ें फ़र्ज़ हैं, लेकिन फ़र्ज़के अलावा पांच नमाज़ोंके साथ पेहले या बादमें कुछ सुन्नत और नफ़्ल नमाज़ें भी पढ़ी जाती हैं जिनकी तफ़सील नीचे दी जा रही है :

नमाज़	रक़अत	सुन्नत (फ़र्ज़से पेहले)	फ़र्ज़	सुन्नत (फ़र्ज़के बाद)	नफ़्ल
फ़ज्र	४	२	२	-	-
जुहुर	१२	४	४	२	२
अस्र	८	४	४	-	-
मगरिब	७	-	३	२	२
ईशा	१७	४	४	२	२

वित्र वाजिब ३

नफ़्ल २

जुम्आ :

जुम्आमें कुल १४ रक़अतें हैं :

४ सुन्नत, २ फ़र्ज़, ४ सुन्नत, २ सुन्नत, और २ नफ़्ल

૯. નમાઝકે અવકાત :

૧. ફજ : ફજકા વકત સુબહ સાદિકકે તુલૂઅ હોનેસે લેકર સૂરજ કે તુલૂઅ હોને તક હૈ. ઈમામ અબૂ હનીફા રહ.કે નઝદીક સુબહકી નમાઝકા 'અસ્ફાર' (જબકે રોશની ફૈલ જાએ)મેં પઢના અફઝલ હૈ યા'ની તુલૂઅ આફતાબસે ઈતના પેહલે કે કિસી વજહસે નમાઝ દોબારા પઢની પઢે તો મસ્નૂન તરીકે પર વુઝૂ કરને ઔર ઈત્મીનાનસે નમાઝ પઢનેકા વકત બાકી હો.

ઈમામ શાફઈ રહ., ઈમામ માલિક રહ. ઔર ઈમામ અહમદ બિન હંબલકે નઝદીક ફજકી નમાઝ 'ગલસ (અંધેરેમેં) પઢના અફઝલ હૈ.

૨. ઝુહર : ઝુહરકી નમાઝકા વકત સૂરજકે ઝવાલકે સાથ શુરૂ હો જાતા હૈ ઔર ઉસ વકત તક રહતા હૈ જબ હર ચીઝકા સાયા ઉસકે બરાબર હો જાએ. (ઝવાલકા વકત માલૂમ કરનેકે લિયે ખુલી ઔર હમવાર ઝમીનમેં ઝવાલસે પેહલે એક લકડી ગાડ દેં, લકડીકા સાયા આહિસ્તા આહિસ્તા કમ હો જાએગા, યહાં તક કે ઝવાલકા વકત કમસે કમ રેહ જાએગા, ઈસ સાયેકો નાપ લેં. જબ યહ સાયા બઢને લગે તો યે ઈસ બાતકી અલામત-નિશાની હૈ કે ઝવાલ હો ગયા. ફિર જબ યે સાયા ઈતના બઢ જાએ કે લકડીકે બરાબર હો જાએ તો એક મિસ્લ વકત હો જાએગા.) ઔર તબ તક રેહતા હૈ જબ તક હર ચીઝકા સાયા દુગના ન હો જાએ.

૩. અસ્ર : અસ્રકા વકત ઉસ વકત શુરૂ હો જાતા હૈ જબ હર ચીઝકા સાયા ઉસકે બરાબર હો જાએ ઔર સૂરજ ગુરૂબ હોને તક બાકી રેહતા હૈ.

હનફી મસ્લકકે મુતાબિક અસ્રકી નમાઝ મુઅખ્ખર કરકે (યા'ની સાયા દુગના હો જાએ તબ) પઢના અફઝલ હૈ.

કિસી ઉઝરકે બગૈર અસ્રકા મગરિબકે કરીબ તક મુઅખ્ખર કરના મકરૂહ હૈ.

૪. મગરિબ: મગરિબકા વકત સૂરજકે ગુરૂબ હોનેસે શુરૂ હોકર યા'ની સુખી ગાયબ હોને તક યા'ની સફેદી પેદા હો જાને તક બાકી રેહતા હૈ.

મગરિબકી નમાઝ અવ્વલ વકતમેં પઢના મુસ્તહબ હૈ જબકે બિલા વજહ મુઅખ્ખર કરના મકરૂહ હૈ.

૫. ઈશા : ઈશાકા વકત શફક ગાયબ હોનેસે શુરૂ હો કર તિહાઈ યા આધી રાત તક બાકી રેહતા હૈ. લેકિન મજબૂરી ઔર ઉઝર હો તો તુલૂએ ફજ તક ઈશાકી નમાઝ પઢી જા સકતી હૈ. ઈશાકી નમાઝ મુઅખ્ખર (તાખીર) કરકે પઢના અફઝલ હૈ.

હર નમાઝકા વકત દૂસરી નમાઝકા વકત શુરૂ હોને તક બાકી રેહતા હૈ સિવાય ફજકે જો સૂરજ નિકલને પર ખત્મ હો જાતા હૈ.

નમાઝ કૌનસે અવકાતમેં પઢના મના હૈ :

૧. અઝકી નમાઝકે બાદ યહાં તક કે સૂરજ ગુરૂબ હો જાએ.
 ૨. ફજકી નમાઝકે બાદ યહાં તક કે સૂરજ તુલૂઅ હો જાએ.
 ૩. જબ સૂરજ તુલૂઅ હો રહા હો, યહાં તક કે વહ બુલંદ હો જાએ.
 ૪. નિસ્ફુન્નહાર (મધ્યાહન, દોપહર) પર સૂરજ હો, ઔર
 ૫. જબ સૂરજ ગુરૂબ હોનેકે લિયે ઝુકે યહાં તક કે ગુરૂબ હો જાએ.
- ઈન અવકાતમેં નમાઝ પઢના મકરૂહ હૈ.

કોઈ અગર સૂરજ તુલૂઅ હોનેસે પેહલે નમાઝે ફજ ઔર ગુરૂબ હોનેસે પેહલે નમાઝે અઝકી એક રક઼્અત (રુકૂઅ-સિજદાકે સાથ) પા લે તો, ઉસને નમાઝ પા લી વો ઉસે પૂરી કર સકતા હૈ.

સુબહકી અઝાન ઔર ફર્જ નમાઝકે દરમિયાન દો સુન્નતોકે સિવા કોઈ નમાઝ નહીં.

જબ જમાઅત ખડી હો જાએ તો સિવાય ફઝકે કોઈ નમાઝ નહીં.
(મુસ્લિમ, અહમદ, નસાઈ, તિર્મિઝી, અબૂ દાઉદ)

મગર ફિકહે હનફીમેં સુબહકી સુન્નતેં જમાઅતકે ખડે હોનેકે બાવુજૂદ દૂર ફાસલે પર પઢી જા સકતી હેં, જબ કે જમાઅતકે ખત્મ હોનેકા અંદેશા ન હો.

તન્હા નમાઝ પઢનેવાલેકે લિયે ત્રીન ચીઝેં ઝરૂરી હેં :

(૧) સબસે પેહલે યહ નીચ્ચત કરે કે વહ અલ્લાહકે લિએ નમાઝ પઢ રહા હેં.

(૨) ઈસ બાતકી નીચ્ચત કરે કે વહ કૌનસી નમાઝ પઢ રહા હેં.

(૩) કિબ્લેકી તરફ મુંહ કરે.

ઈમામ ભી વહી નીચ્ચત કરે જો તન્હા નમાઝ પઢનેવાલા નીચ્ચત કરતા હેં.

૧૦. નમાઝ પઢનેકા તરીકા-તરકીબ :

વુજૂ કર કે પાક કપડે પહન કર પાક જગહ પર કિબ્લેકી તરફ મુંહ કરકે ખડે હો જાએ. નમાઝકી નીચ્ચત કરકે દોનોં હાથ કાનોં તક ઉઠાએં ઔર

અલ્લાહુ અકબર

الله أكبر

કેહ કર હાથોંકો નાફકે નીચે બાંધ લેં. સીધા હાથ ઉપર ઔર ઉલ્ટા હાથ ઉસકે નીચે રખેં. નમાઝમેં ઈધર-ઉધર ન દેખેં ઔર અદબસે ખડે હો જાએં. ખુદાએ તઆલાકી તરફ ધ્યાન રખેં, હાથ બાંધ કર સના પઢેં.

सना:

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ
وَتَعَالَى جَدُّكَ وَلَا إِلَهَ غَيْرُكَ

सुब्धानकल्लाहुम्म व बिहमिदिक व तबारकस्मुक व तआला जहुक व ला
ईलाह गौरुक. (जामेअ तिर्मिज़ी - २४३)

किर

أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ

अउिउु बिस्लाहि मिनशूशयतानिर्रजूम

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमा निर्रहीम

पढें और किर सूर:अे फातिहा पढें, सूर:अे फातिहा अत्म होने पर
आहिस्तासे आमीन कहें. सूर: फातिहाके बाद कोई सूर: पढें.

उनकियहका मरलक यही है के आहिस्तासे आमीन कही जाय, अेक
रिवायतमें इमाम मालिक रह. का भी यही कौल मन्कूल है और इमाम
शाफई रह.का भी यही कौल है. अलबत्ता उहीससे आहिस्ता पढना
और बुलंद आवाजसे पढना दोनों साबित हैं, इसलिये यह हरगिज
सही नहीं है के इस बुनियाद पर गिरोहबंदी की जाये और अेक दूसरेको
लानत-मलामत की जाये, जबके दोनों बातें उहीससे साबित हैं तो,
जिस तरीकेको अपने इहम (समज)के मुताबिक सुन्नतसे समजकर उसकी
इत्तिबाअ कर रहा हो उसकी कदर करनी चाहिये न के तहकीर व तजवील.

सूर: शक्तिः :

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ مَلِكِ يَوْمِ
الدِّينِ ۝ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ ۝ اهْدِنَا الصِّرَاطَ
الْمُسْتَقِيمَ ۝ صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۝ غَيْرِ
الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ ۝

अलहम्दु लिस्लाहि रब्बिल आलमीन, अर्रहमा निर्रहीम, मालिकि यौमिदीन. धय्या-क नअब्बुदु व धय्याक नस्तईन. धदिद नस्सिरातल मुस्तकीम. सिरातल्लजीना अन्अस्त अलैहिम गैरिल मगूदूभि अलैहिम वलद्दहाल्लीन. (आमीन.)

وَالْعَصْرِ ۝ إِنَّ الْإِنْسَانَ لِرَبِّهِ لَكْفُورٌ ۝ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا
وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَتَوَّصُوا بِالحَقِّ ۝ وَتَوَّصُوا بِالصَّبْرِ ۝

वल अस्रि ईन्नल ईन्साना लकी भुस ईल्लल्लजीना आमनू व अभिलुस्साविहाति व तवासौ भिलहकि, व तवासौ भिस्सभ्र.

सूर: के अत्म होने पर

अल्लाहु अकबर

اللَّهُ أَكْبَرُ

केल कर रुकूअके लिये रुकें. रुकूअमें दोनों हाथोंसे घुटनोंको पकड लें, उंगलियां झेला कर रभें और कमसे कम तीन बार

सुब्हान रब्बियल अजीम

سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَظِيمِ

पढ़ें, फिर

समिअल्लाहु लिमन हमिदह

سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ

केहते हुअे सीधे जडे हो जाअें; फिर....

रब्बना लकल हमद

رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ

पढ़ें,

फिर तकबीर केहते हुअे सजदेमें जाअें. और कमसे कम तीन बार

सुब्हान रब्बियल आ'ला

سُبْحَانَ رَبِّيَ الْأَعْلَى

पढ़ें. फिर अल्लाहु अकबर केह कर दूसरा सजदह एसी तरह करें. फिर अल्लाहु अकबर केहते हुअे जडे हो जाअें, एस तरह अेक रकूअत हो गइ.

अब दूसरी रकूअत शुरू हुइ. बिस्मिल्लाह पढकर सूर: अे फातिहा पढ़ें और आमीन केह कर कोई दूसरी सूर: मिलाअें और पेहली रकूअतकी तरह रुकूअ और दोनों सजदे करके भेठ जाअें और अतडियात पढ़ें.

अतडियात:

التَّحِيَّاتُ لِلَّهِ وَالصَّلَوَاتُ وَالطَّيِّبَاتُ، السَّلَامُ عَلَيْكَ

أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ، السَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلَى

عِبَادِ اللَّهِ الصَّالِحِينَ أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ

مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ ○

અત્તહિયાતુ લિલ્લાહિ વસ્સલવાતુ વતૈયિબાતુ અસ્સલામુ અલયક અય્યુહન્નબીય્યુ વ રહમતુલ્લાહિ વ બરકાતુહ. અસ્સલામુ અલૈના વ અલા ઈબાદિલ્લા હિરસાલિહીન. અશ્હદુઅલ્લાઈલાહ ઈલ્લલ્લાહુ વ અશ્હદુ અન્ના મુહમ્મદન અબ્દુહુ વ રસૂલુહ. (જામેઅ તિર્મિઝી - ૨૮૮)

દુરૂદે ઈબ્રાહીમ

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ، وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ، كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى
إِبْرَاهِيمَ، وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ، اللَّهُمَّ
بَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ، وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ، كَمَا بَارَكْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ
وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ، إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ.

અલ્લાહુમ્મ સલ્લિ અલા મુહમ્મદિંવ વ અલા આલિ મુહમ્મદિન કમા સલ્લયતા અલા ઈબ્રાહીમ વ અલા આલિ ઈબ્રાહીમ ઈન્નકા હમીદુમ્મજીદ.

અલ્લાહુમ્મા બારિક અલા મુહમ્મદિંવ વ અલા આલિ મુહમ્મદિન કમા બારકત અલા ઈબ્રાહીમ વ અલા આલિ ઈબ્રાહીમ ઈન્નક હમીદુમ્મજીદ.
(સહીહ બુખારી - ૬૩૫૭)

દુરૂદે ઈબ્રાહીમકે બાદ યે દુઆ પઢે:

اللَّهُمَّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي ظُلْمًا كَثِيرًا وَلَا يَغْفِرُ الذُّنُوبَ
إِلَّا أَنْتَ، فَاعْفُرْ لِي مَغْفِرَةً مِّنْ عِنْدِكَ، وَارْحَمْنِي إِنَّكَ
أَنْتَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ.

અલ્લાહુમ્મા ઈન્ની ઝલમતુ નફ્સી ઝુલમન કસીરૌ વલા યગ્ફિરુઝ્ઝુબ
 ઈલ્લા અન્ત ફગ્ફિરલી મગ્ફિરતન મિન ઈન્દિક વરહમની ઈન્નકા અન્તલ
 ગફૂરરહીમ. (મુત્તફિક અલયહ અલ બુખારી - ૮૩૪)

દુઆ પઢનેકે બાદ સલામ ફેર લેં, પેહલે સીધી તરફ ફિર ઉલ્ટી તરફ.

السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللَّهِ

અસ્સલામુ અલયકુમ વ રહમતુલ્લાહ (જામેઅ તિર્મિઝી - ૨૯૫)

સલામ ફેરનેકે બાદ યે દુઆ પઢેં:

اللَّهُمَّ أَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ تَبَارَكْتَ

يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

અલ્લાહુમ્મ અન્તસ્સલામુ વ મિનકસ્સલામુ તબારકત

યા ઝલજલાલિ વલ ઈકરામ. (સહીહ મુસ્લિમ - ૧૩૩૫)

દો રક્અત વાલી નમાઝ પૂરી હો ગઈ.

અગર ત્રીન રક્અત યા ચાર રક્અતવાંલી નમાઝ પઢની હોં તો
 કઅદ્દેમે અત્તહિય્યાતકે બાદ દુરુદશરીફ ન પઢેં બલકે અલ્લાહુ અકબર
 કેહ કર ખડે હો જાએ. અગર નમાઝ વાજિબ યા સુન્નત યા નફ્લ હૈ તો
 આખરી દો રક્અતેં ભી પેહલી દો રક્અતોં કી તરહ પઢ લેં., યા'ની
 ઉનમેં અલ હમ્દુશરીફકે બાદ કોઈ સૂર: ઝરૂર પઢેં. ઔર અગર ફર્જ
 નમાઝ પઢેં તો ત્રીસરી રક્અત ઔર ચોથી રક્અતમેં અલ હમ્દુ શરીફકે
 બાદ કોઈ સૂર: ન પઢેં.

સજ્દાએ સહ્વકા બયાન :

સહ્વકા મતલબ હૈ ભૂલ જાના. નમાઝમેં ભૂલેસે કુછ કમી યા ઝયાદતી હો જાનેસે જો ખરાબી આ જાતી હૈ ઉસકી તલાફી (ભરપાઈ)કે લિયે નમાઝકે આખરી કઅદેમેં દો સજ્દે કરના વાજિબ હૈ, ઇન સજ્દોંકો સજ્દાએ સહ્વ કેહતે હૈ.

સજ્દાએ સહ્વકા તરીકા :

નમાઝકે આખરી કઅદેમેં 'અત્તહિયાત' પઢ લેનેકે બાદ દાહની જાનિબ સલામ ફેરેં, ઔર 'અલ્લાહુ અકબર' કેહ કર સજ્દાએ જાએ, ઇત્મીનાનસે સજ્દાહ કરેં.' ફિર અલ્લાહુ અકબર કેહ કર સજ્દાએ ઉઠેં, ઇત્મીનાનસે બેઠેં, ઔર ફિર 'અલ્લાહુ અકબર' કેહ કર કે સજ્દાએ જાએ. ઔર ઇત્મીનાનસે સજ્દાહ કરેં, ફિર 'અલ્લાહુ અકબર' કેહ કર સજ્દાએ ઉઠેં ઔર કઅદેમેં બેઠ જાએ, ઔર હસ્બે મા'મૂલ 'અત્તહિયાત', દુરૂદ શરીફ ઔર દુઆ પઢકર દોનોં તરફ સલામ ફેરેં.

વહ સૂરતેં જિનમેં સજ્દાએ સહ્વ વાજિબ હૈ :

૧. નમાઝકે વાજિબાતમેંસે કોઈ વાજિબ ભૂલેસે છૂટ જાએ, મસલન સૂર: ફાતિહા પઢના ભૂલ જાએ યા સૂર: ફાતિહાકે બાદ કોઈ સૂર: મિલાના ભૂલ જાએ વગૈરહ.

૨. કિસી વાજિબકે અદા કરનેમેં કુછ તાખીર (દેર) હો જાએ. યાહે તાખીર ભૂલેસે હો જાએ યા કુછ સોચનેકી વજહસે, મસલન કોઈ શખ્સ સૂર: ફાતિહા પઢનેકે બાદ ખામોશ ખડા રહે ઔર ફિર કુછ વકફેકે બા'દ કોઈ સૂર: પઢે.

૩. કિસી ફર્જકે અદા કરનેમેં તાખીર હો જાએ યા કિસી ફર્જકો મુકદમ કર દિયા જાએ, મસલન કિર્મત કરનેકે બાદ રુકૂઅ કરનેમેં તાખીર હો જાએ (યહાં તાખીરસે મુરાદ ઇતની દેરકા વકફા હૈ જિસમેં આદમી એક

સજ્દા યા એક રુકૂઅ કર સકે) યા રુકૂઅસે પેહલે સજ્દામેં ચલા જાએ.

૪. કિસી ફર્જકો મુકરર અદા કર દિયા જાએ, મસલન દો રુકૂઅ કર લિયે જાએ.

૫. કિસી વાજિબકી કૈફિયત બદલ દી જાએ, મસલન સર્ની નમાઝોમેં બુલંદ આવાઝસે કિર્ત કર લી જાએ, યા જહરી નમાઝોમેં આહિસ્તા કિર્ત કર લી જાએ, મસલન ઝુહર ઔર અમ્લમેં બુલંદ આવાઝસે કિર્ત કર લી, ઔર મગરિબ વ ઈશા યા ફજૂરમેં આહિસ્તા કિર્ત કર લી.

સજ્દાએ સહ્વકે મસાઈલ :

૧. નમાઝકે ફરાઈઝમેંસે અગર કોઈ ફર્જ કસદન છૂટ જાએ યા સહ્વન, તો નમાઝ ફાસિદ હો જાએગી. ઈસી તરહ અગર કોઈ વાજિબ કસદન છોડ દિયા ગયા તો ભી નમાઝ ફાસિદ હો જાએગી ઔર સજ્દાએ સહ્વ કર લેનેસે નમાઝ સહીહ ન હોગી બલકે નમાઝ દોબારા પઢની હોગી.

૨. એક વાજિબ છૂટ જાએ યા એકસે ઝયાદા, બહર હાલ એક હી મરતબા દો સજ્દા કરના કાફી હૈં, યહાં તક કે અગર નમાઝકે સારે વાજિબાત છૂટ જાએ તબ ભી દો હી સજ્દા કાફી હૈં, દો સે ઝયાદા સજ્દાએ સહ્વ કરના સહી નહીં હૈં.

૩. અગર કોઈ ભૂલેસે હાલતે કયામમેં સૂર: ફાતિહાસે પેહલે અત્તહિયાત પઢ લે તો સજ્દાએ સહ્વ વાજિબ ન હોગા. ઈસલિયે કે સૂર: ફાતિહાસે પેહલે ખુદાકી હમ્દ વ સના પઢી જાતી હૈં, ઔર અત્તહિયાતમેં ભી ખુદાકી હમ્દ વ સના હૈં, હાં, અગર કિર્તતકે બાદ યા દૂસરી રક્ૂઅતમેં કિર્તતસે પેહલે યા કિર્તતકે બાદ અત્તહિયાત પઢ લી જાએ તો સજ્દાએ સહ્વ વાજિબ હોગા.

૪. અગર કિસીસે ભૂલેસે કોમા (રુકૂઅસે ઉઠનેકે બાદ ઈત્મીનાનસે સીધા ખડે હોનેકો કોમા કહતે હૈં, કોમા નમાઝકે વાજિબાતમેંસે હૈં) કરના

રેહ જાએ યા દોનોં સજદોંકે દરમ્યાન જલસા (સજદોંકે દરમ્યાનકી નશિસ્ત-
બેઠનેકો ફિકહકી ઇસ્તિલાહમેં જલસા કહા જાતા હૈ, જલસા નમાઝકે
વાજિબાતમેંસે હૈ, રેહ જાએ તો સજ્દએ સહ્વ કરના ઝરૂરી હૈ.

૫. અગર કોઈ શખ્સ કઅ્દએ ઊલા કરના ભૂલ ગયા ઔર બેઠનેકે
બજાએ ઉઠકર પૂરી તરહ ખડા હો ગયા તો ફિર યાદ આને પર ન બેઠે
બલ્કે નમાઝ પૂરી કરકે કાયદેકે મુતાબિક સજ્દએ સહ્વ કરે, ઔર અગર
પૂરી તરહ ખડા ન હુવા હો બલ્કે સજ્દસે કરીબ હો તો બેઠ જાએ ઔર ઇસ
સૂરતમેં સજ્દએ સહ્વ કરનેકી ઝરૂરત નહીં.

૬. અગર કોઈ શખ્સ કઅ્દએ ઊલા કરના ભૂલ ગયા ઔર બેઠનેકે
બજાએ ઉઠકર પૂરી તરહ ખડા હો ગયા તો ફિર યાદ આને પર ન બેઠે
બલ્કે નમાઝ પૂરી કર કે કાયદે કે મુતાબિક સજ્દએ સહ્વ કરે, ઔર અગર
પૂરી તરહ ખડા ન હુવા હો બલ્કે સજ્દસે કરીબ હો તો બેઠ જાએ ઔર ઇસ
સૂરતમેં, સજ્દએ સહ્વ કરને કી ઝરૂરત નહીં.

૭. અગર કોઈ દો યા ચાર રક્અતવાલી ફર્જ નમાઝમેં કઅ્દએ અખીરા
ભૂલ ગયા ઔર બેઠનેકે બજાએ ઉઠ કર ખડા હો ગયા, અબ અગર ઉસકો
સજ્દા કરનેસે પેહલે યાદ આ જાએ તો બેઠ કર નમાઝ પૂરી કરે ઔર
સજ્દએ સહ્વ કર લે. સજ્દએ સહ્વ કર લેનેકે બાદ ફર્જ નમાઝ દુરુસ્ત
હો જાએગી, ઔર અગર સજ્દા કર લેનેકે બાદ યાદ આયા કે કઅ્દએ
અખીરા નહીં ક્રિયા હૈ તો અબ ન બેઠે. બલ્કે એક રક્અત ઔર મિલાકર
ચાર રક્અત યા છ રક્અત પૂરી કરે. ઔર ઇસ સૂરતમેં સજ્દએ સહ્વ
કરનેકી ઝરૂરત નહીં હૈ. ઔર યે ઝાઈદ રક્અતેં નફ્લ કરાર પાએંગી,
ફર્જ નમાઝ દોબારા અદા કરની હોગી. ઔર અગર મગરિબકે ફર્જમેં
ભૂલ હો જાએ તો ફિર પાંચવી રક્અત ન પઢે, ચોથી રક્અતમેં બેઠ કર
નમાઝ પૂરી કર લે, ઇસ લિયે કે નફ્લકી રક્અતેં તાક-એકી નહીં હોતી,
આપ સલ્લલ્લાહુ અલૈહિ વસલ્લમકા ઇશાદિ હૈ, 'નફ્લ નમાઝકી રક્અતેં
દો દો હૈં.'

૮. અગર સૂર: ફાતિહા પઢના ભૂલ જાએ, યા દુઆએ કુનૂત પઢના ભૂલ જાએ, યા 'અત્તહિયાત' પઢના ભૂલ જાએ, યા ઈદુલફિત્ર યા ઈદુલ અઝહાકી ઝાઈદ તકબીરે ભૂલ જાએ તો સજ્દએ સહ્વ કરના વાજિબ હૈ.

૯. મગરિબ, ઈશા યા ફજ્જકી જહરી (જહરી વો નમાઝ હૈ જિસમેં ઈમામકે લિયે બુલંદ આવાઝસે કિર્અત કરના વાજિબ હૈ, મસલન મગરિબ ઔર ઈશાકી પેહલી દો રક્અતેં ઔર ફજ્જ, જુમ્આ ઔર ઈદૈનકી નમાઝેં ઝરૂરી હૈ, ઈસ લિયે કે ઈનમેં બુલંદ આવાઝસે કિર્અત કરના ઈમામકે લિયે વાજિબ હૈ.) નમાઝોમેં અગર ઈમામને ભૂલેસે કિર્અત આહિસ્તા કી યા જુહર ઔર અઝ્ઝકી સર્રી નમાઝોમેં (જિન નમાઝોમેં ઈમામકે લિયે ખામોશીસે કિર્અત કરના વાજિબ હૈ ઉન નમાઝોકો સર્રી નમાઝ કેહતે હૈં, મસલન જુહર ઔર અઝ્ઝકી નમાઝ) ઈમામને ભૂલેસે કિર્અત બુલંદ આવાઝસે કી તો સજ્દએ સહ્વ કરના વાજિબ હૈ.

૧૦. અગર ઈમામસે કોઈ વાજિબ વગૈરહ છૂટ જાએ ઔર સજ્દએ સહ્વ વાજિબ હો જાએ તો મુક્તદીકો ભી સજ્દએ સહ્વ કરના હોગા. ઔર અગર મુક્તદીસે કોઈ વાજિબ વગૈરહ છૂટ જાએ તો ન મુક્તદી પર સજ્દએ સહ્વ વાજિબ હોગા ઔર ન ઈમામ પર.

૧૧. અગર સૂર: ફાતિહાકે બાદ દૂસરી સૂર: મિલાના ભૂલ જાએ, યા સૂર: પેહલે પઢ લે, ઔર સૂર: ફાતિહા બા'દમેં પઢે તો સૂર: ફાતિહાકે બાદ ફિર કોઈ સૂર: પઢે ઔર આખરી કઅ્દમેં લાઝિમન સજ્દએ સહ્વ કરે.

૧૨. અગર ફર્ઝ નમાઝકી પેહલી દો રક્અતોમેં યા એક રક્અતમેં સૂર: મિલાના ભૂલ જાએ તો બા'દકી રક્અતોમે સૂર: મિલા લે ઔર સજ્દએ સહ્વ કરકે નમાઝ પૂરી કરે.

૧૩. અગર સુન્નાત યા નફ્લ નમાઝકી કિસી રક્અતમેં સૂર: મિલાના ભૂલ જાએ તો સજ્દએ સહ્વ કરના લાઝિમ હૈ.

૧૪. અગર કોઈ ચાર રક્તવાલી ફર્જ નમાઝકી આખરી રક્તતમે ઈતની દેર તક બેઠા જિતની દેરમે 'અત્તહિયાત' પઢી જાતી હો, ઓર ફિર ઉસે શુબ્હ હુવા કે યે કમ્દએ ઊલા હૈ ઓર વહ સલામ ફેરનેકે બજાએ પાંચવી રક્તતકે લિયે ઉઠ ખડા હુવા, અબ સજદા કરનેસે પેહલે ઉસે યાદ આ જાએ તો બેઠ કર નમાઝ પૂરી કરે ઓર હસ્બે કાયદા સજ્દએ સહ્વ ભી કર લે. (ઈસ લિયે કે સલામ ફેરનેમે તાખીર હો ગઈ) ઓર સલામ ફેર લે ઓર અગર પાંચવી રક્તતકા સજદા કર લિયા હૈ તો છટ્ટી રક્તત ઓર મિલા લે ઓર સજ્દએ સહ્વ કરકે નમાઝ પૂરી કર લે, ઈસ સૂરતમે ઉસકી ફર્જ નમાઝ સહી હો જાએગી ઓર યહ દો ઝાઈદ રક્તતે નફ્લ કરાર પાએગી.

૧૫. ચાર રક્તવાલી ફર્જ નમાઝકી આખરી દો રક્તતોમે કોઈ મુન્ફરિદ યા ઈમામ સૂર: ફાતિહા પઢના ભૂલ જાએ તો સજ્દએ સહ્વ વાજિબ ન હોગા, હાં અગર સુન્નત યા નફ્લ નમાઝોમે ભૂલ જાએ તો સજ્દએ સહ્વ વાજિબ હૈ. ઈસ લિયે કે ફર્જ નમાઝકી આખરી રક્તતોમે સૂર: ફાતિહા પઢના વાજિબ નહીં હૈ, ઓર સુન્નત ઓર નફ્લ નમાઝકી હર રક્તતમે સૂર: ફાતિહા પઢના વાજિબ હૈ.

૧૬. અગર કોઈ ભૂલસે એક રક્તતમે દો રુકૂઅ કર લે, યા એક રક્તતમે ત્રીન સજ્દે કર લે, યા સૂર: ફાતિહા દો બારા પઢ લે તો સજ્દએ સહ્વ વાજિબ હો જાએગા. (ઈસ લિયે કે સૂર: ફાતિહાકા એક બાર પઢના વાજિબ હૈ).

૧૭. અગર કમ્દએ ઊલામે અત્તહિયાત પઢનેકે બાદ કોઈ દુરુદ શરીફ પઢને લગે ઓર અલ્લાહુમ્મ સલ્લિઅલા મુહમ્મદિનકે બકદ્ર (જિતના) પઢ લે યા ઈતની દેર યૂં હી ખામોશ બેઠા રહે તો સજ્દએ સહ્વ વાજિબ હો જાએગા.

૧૮. અગર કિસી મસ્બૂકસે (મસ્બૂક ઉસ મુકતદીકો કેહતે હૈ જો કુછ તાખીરસે જમાઅતમે આકર શરીક હો જબ કે એક યા એક સે ઝાઈદ

रक़्अतें हो चुकी हों) अपनी बाकी नमाज़ पूरी करनेमें कोई कोताही हो जाये तो नमाज़के आभरी क़अदेमें उस पर सज़्दअे सइव करना वाज़िब है.

१८. अगर किसीने जुहर या अज़्ज़की क़र्ज़ नमाज़की दो रक़्अतें पढी, लेकिन ये समज़ कर के यारों रक़्अतें पढ चुका है, उसने सलाम फेर लिया, और सलाम फेरनेके बाद याद आया के दो ही रक़्अतें पढी हैं तो बाकी दो रक़्अतें पढ कर नमाज़ पूरी कर ले और सज़्दअे सइव करे.

२०. अगर किसीको नमाज़में शक हो गया के मा'लूम नहीं तीन रक़्अतें पढी हैं या चार तो अगर उसको इत्तिफ़ाकसे पेलली बार ये शक हुआ है, आम तौर पर उसको इस तरहके शक करनेकी आदत नहीं है, तो उसको दो बारा नमाज़ पढनी चाहिये और अगर उसको अक्सर व बेशतर इस तरहका शक होता ही रहता है तो फिर वह अपने गुमाने गालिब (ऐसा शुब्ह-गुमान- जो यकीन के दर्जे का हो) पर अमल करे, और अगर किसी तरह ज़यादा गुमान न हो तो फिर कम रक़्अतोंमें अे'तेबार करे, मसलन किसीको जुहरकी नमाज़में शक हो जाये के मा'लूम नहीं तीन रक़्अतें हुए हैं या चार, और किसी तरह गुमाने गालिब भी नहीं है, तो उस सूरतमें यही समझे के तीन ही रक़्अतें पढी हैं, और अेक रक़्अत और पढ कर चार रक़्अत पूरी करे, और सज़्दअे सइव हर सूरतमें करे.

२१. नमाज़की सुन्नतें या मुस्तहिबात छूट जानेसे सज़्दअे सइव वाज़िब नहीं होता, मसलन नमाज़के शुरुमें सना पढना भूल गया, या रुकूअ और सज़्दअेमें तरबीह पढना भूल जाये, या रुकूअमें जाने और उठनेकी हुआ भूल जाये या हुज़्द शरीफ़ और उसके बादकी हुआ भूल जाये तो इन तमाम सूरतोंमें सज़्दअे सइव वाज़िब न होगा.

२२. नमाज़में कोई ऐसी कोताही हो गई जिसकी वजहसे सज़्दअे सइव लाज़िम हो गया है, लेकिन उसने नमाज़ पूरी कर ली और सज़्दअे

સહવ કરના ભી ભૂલ ગયા, સલામ ફેરનેકે બાદ યાદ આયા કે સજ્દએ સહવ રહ ગયા, અબ અગર ઉસને કિબલેકી તરફસે રુખ નહીં ફેરા હૈ, ઔર કિસીસે બાતચીત ભી નહીં કી હૈ, તો ફૌરન સજ્દએ સહવ કર લે, ઔર ફિર અત્તહિયાત, દુરુદ ઔર દુઆ પઢ કર સલામ ફેર દે.

૨૩. અગર કિસીને એક રક્ઝતમે ભૂલસે એક હી સજ્દા કિયા, અબ અગર 'કાઅ્દએ અખીરા' કી 'અત્તહિયાત' પઢનેસે પેહલે પેહલી રક્ઝતમે યા દૂસરી રક્ઝતમે યા જબ ભી યાદ આએ તો સજ્દા અદા કર લે. ઔર હસ્બે કાયદા સજ્દએ સહવ કરે ઔર અગર 'અત્તહિયાત' પઢ લેનેકે બાદ સજ્દા યાદ આયા તો સજ્દએ સહવ અદા કરનેકે બાદ 'અત્તહિયાત' ફિર પઢે ઔર સજ્દએ સહવ કરકે હસ્બે કાઈદા નમાઝ પૂરી કરે.

૨૪. અગર સફરકે દૌરાન જબ કે કઝકા પઢના વાજિબ હૈ કિસીને ભૂલસે કઝ કરનેકે બજાએ પૂરી ચાર રક્ઝત નમાઝ પઢી, ઔર દૂસરી રક્ઝતમે બેઠ કર 'અત્તહિયાત' પઢ લી, તો ઈસ સૂરતમે ભી આખરી રક્ઝતમે કાઈદેકે મુતાબિક સજ્દએ સહવ કરના વાજિબ હૈ, ઔર ઈસ સૂરતમે યે નમાઝે કઝ ઈસ તરહ સહી હો જાએગી કે પેહલી દો રક્ઝત ફર્જ કરાર પાએંગી ઔર આખરી દો રક્ઝતને નફ્લ કરાર પાએંગી.

વિત્રકી નમાઝ :

વિત્રકી નમાઝ વાજિબ હૈ. ઈસકી તીન રક્ઝતને હેં ઔર ઈશાકી ફર્જ નમાઝકે બાદ પઢી જાતી હૈ, અગર કિસી વજહસે વિત્રકી નમાઝ છૂટ જાએ તો ઉસકી કઝા વાજિબ હૈ ઔર બિલા ઉઝર છોડના સખ્ત ગુનાહ હૈ. ઈસકી તીસરી રક્ઝતમે દુઆએ કુનૂત પઢી જાતી હૈ.

दुआअे कुनूत :

اللَّهُمَّ إِنَّا نَسْتَعِينُكَ وَنَسْتَغْفِرُكَ وَنُؤْمِنُ بِكَ وَنَتَوَكَّلُ
عَلَيْكَ وَنُثْبِتِي عَلَيْكَ الْخَيْرَ وَنَشْكُرُكَ وَلَا نَكْفُرُكَ
وَنَخْلَعُ وَنَتْرُكُ مَنْ يَفْجُرُكَ اللَّهُمَّ إِنَّا نَعْبُدُ وَلَكَ
نُصَلِّي وَنَسْجُدُ وَإِلَيْكَ نَسْعِي وَنَحْفِدُ وَنَرْجُو رَحْمَتَكَ
وَنَخْشَى عَذَابَكَ إِنَّ عَذَابَكَ بِالْكَفَّارِ مُلْحِقٌ

अल्लाहुम्मा ईन्न नस्तईनुक व नस्तगुफ़िरुक व नुअ मिनु भिक व न
तवककलु अलैक व नुस्नी अलैकल भैर व नशुकुरुक व ला नकहुुरुक व नभूलउ
व नतरुकु मैय्यइशुरु क अल्लाहुम्म ईय्या क ना'बुदु व ल क नुसल्ली व
नसुशुदु व ईलै क नसुआ व नइकिदु व नशू रइमत क व नश्या अजाभ क
ईन्न अजाभ क भिल कुइइरि मुल्लडिक. (सुनन भयडकी बाभ दुआअे
कुनूत - २२३)

नमाजे तरावीह :

नमाजे तरावीह औरत और मर्द दोनोके लिये सुन्नते मुअकिददा हे
और जमाअतसे पढना सुन्नत है, या'नी अगर मुहल्लेकी मस्जिदमें
नमाजे तरावीह जमाअतसे पढी जाती है और कोई ईन्सान किसी वजहसे
तन्हा घरमें पढ ले तो गुनेहगार नहीं होगा.

नमाजे तरावीहका वक्त ईशाकी इर्ज नमाज पढनेके आ'दसे इज तक
है. तरावीहमें बीस रकूअतें हैं.

બીમારકી નમાઝકા બયાન :

અગર મરીઝમે ખરે હોનેકી તાકત ન હો યા ખરે હોનેસે સખ્ત તકલીફ પહોંચતી હો, યા બીમારી ઝયાદા હો જાનેકા ખતરા હો, યા સરમે ચક્કર આનેસે ગિર જાનેકા ડર હો તો નમાઝ બેઠ કર પંઢ સકતા હૈ. રુકૂઅ ઔર સજદા કરનેકી તાકત નહીં હૈ તો સરકે ઈશારેસે નમાઝ પઢે.

મુસાફિરકી નમાઝકા બયાન :

શરીઅતમે મુસાફિર ઉસકો કેહતે હૈ જો ઈતની દૂર જાનેકા ઈરાદા કરકે નિકલે જહાં તીન દિનમે (ચલ કર) દરમિયાની ચાલસે પહોંચ સકે. દરમિયાની દરજેકી ચાલસે પૈદલ આદમીકી ચાલ મુરાદ હૈ ઔર ઠીક બાત તો યહ હૈ કે તીન મંઝિલકી મુસાફરી મોઅતબર હૈ ઔર આસાનીકે લિયે અડતાલીસ મીલકી મુસાફરી તીન મંઝિલકે બરાબર સમઝ લી ગઈ હૈ.

જો શખ્સ કિસી તેઝ રફતાર ગાડી જૈસે કે હવાઈ જહાઝ, રેલગાડી, મોટર વગૈરહમે ઝટ મીલ બહુત હી જલ્દી પહોંચ જાએ વહ ભી મુસાફિર સમઝા જાએગા. મુસાફિર ઝુહર, અઝ્ન ઔર ઈશાકી નમાઝે બજાએ ચાર રફૂઅતકે દો રફૂઅત પઢે ઉસે શરીઅતમે કઝ્ન (છોટા કરના) કેહતે હૈ.

જબ મુસાફિર અપની બસ્તીસે બાહર આ જાએ ઉસ વકતસે કઝ્ન કરને લગે. મુસાફિર ઉસ વકત તક કઝ્ન કરતા રહે, જબ તક વો સફર કરે ઔર અગર કિસી જગહ ૧૫ દિનસે કમ ઠહરનેકી નીચ્ચત હો, જૈસે કે દસ-બારહ દિન તો ભી કઝ્ન કરે, અગર કિસી જગહ દસ-બારહ દિન ઠહરનેકી નીચ્ચત કી લેકિન કામ પૂરા ન હુઆ ઔર ફિર પાંચ-છ દિન ઠહરનેકી નીચ્ચત કર લે તો વો ભી કઝ્ન કરેગા. મુસાફિર કિસી મુકીમ ઈમામકે પીછે નમાઝ પઢે તો મુસાફિરકો ભી પૂરી રફૂઅતે પઢના ફર્ઝ હૈ.

કઝ્ન સિર્ફ ફર્ઝ નમાઝોમે હૈ, સુન્નત ઔર નફ્લમે નહીં હૈ. બસ, મોટરકાર, રેલગાડી ઔર હવાઈ જહાઝમે નમાઝ પઢના જાઈઝ હૈ. અગર

ખડે હો કર પઢનેકી જગહ હો તો ખડે હોકર પઢે વરના બેઠ કર પઢે.

જુમ્આકી નમાઝકા બયાન :

ઈસ્લામમે જુમ્આકી નમાઝકી બહોત ઝયાદા એહમિયત હૈ ઓર સુહરકી નમાઝસે ભી ઝયાદા ઈસકી તાકીદ હૈ. જુમ્આકે દિન સુહરકી નમાઝ નહીં હૈ, જુમ્આકી નમાઝ ઉસકે કાયમ્મુકામ કર દી ગઈ હૈ.

જુમ્આકી નમાઝ આઝાદ, બાલિગ, સમઝદાર, તંદુરસ્ત ઓર મુંકીમ મદર્દો પર ફર્ઝ હૈ. ઈસ લિયે નાબાલિગ બચ્ચો, ગુલામો, દીવાનો, બીમારો, અંધો, અપાલિજો, મુસાફિરો ઓર ઓરતો પર ફર્ઝ નહીં હૈ. અગર મુસાફિર, અંધ, અપાલિજ, બીમાર ઓર ઓરતે જુમ્આમે શરીક હો જાએ તો ઉનકે ઝિમ્મેસે સુહરકી નમાઝ સાકિત હો જાએગી ઓર જુમ્આકી નમાઝ દુરુસ્ત હો જાએગી.

જુમ્આકી નમાઝકી શરતે :

જુમ્આકી નમાઝ ઠીક ઓર સહી હોનેકે લિયે પાંચ શરતે હૈ :

(૧) શહર, બડા ગાંવ ઓર કસ્બેકા હોના. છોટે છોટે દેહાતોમે જુમ્આ દુરુસ્ત નહીં.

(૨) સુહરકા વકત હોના.

(૩) નમાઝસે પેહલે ખુત્બા પઢના.

(૪) જમાઅતસે નમાઝ પઢના.

(૫) ઈઝને આમ યા'ની હર મુસલમાનકો નમાઝ પઢનેકી આમ ઈજાઝત હો.

ખુત્બા અરબી ઝબાનમે દે. બહેતર યહ હૈ કે પેહલા ખુત્બા ઉર્દૂ ઝબાનમે હો ઓર ખુત્બએ સાની (દૂસરા) અરબીમે હો.

ખુત્બેકે વક્ત બાતે કરના, સુન્નત યા નફ્લ નમાઝ શુરુ કરના, ખાના-પીના, કિસી બાતકા જવાબ દેના, કુર્આનકી તિલાવત કરના, ગર્ઝ યહ કે તમામ કામ જો ખુત્બા સુનનેમે ખલલ ડાલેં મકરૂહ હેં. અલબત્તા દૌરાને ખુત્બા કઝા નમાઝ પઢના ન સિર્ફ જાઈઝ બલકે વાજિબ હૈ. જુમ્આકી નમાઝમેં ઈમામકે અલાવા કમસે કમ તીન આદમી હોના ઝરૂરી હેં, અગર તીન આદમી ન હોંગે તો જુમ્આકી નમાઝ સહીહ ન હોગી. જુમ્આકી ફર્ઝ નમાઝમેં દો રફ્અતેં હેં.

ઈદ્દેનકી નમાઝ :

ઈદ્દુલફિત્ર ઓર ઈદ્દુલઅઝહાકી નમાઝોંકો ઈદ્દેનકી નમાઝ કેહતે હેં, દોનોં ઈદ્દોંકી નમાઝેં વાજિબ હેં, ઓર જિન લોગોં પર જુમ્આકી નમાઝ ફર્ઝ હય ઉન્હીં પર ઈદ્દેનકી નમાઝેં ભી વાજિબ હેં, ઓર જો શર્તે જુમ્આકી નમાઝકી હેં વહી શર્તે ઈદ્દેનકી નમાઝોંકી ભી હેં. મગર ઈદ્દેનકી નમાઝકા ખુત્બા તો ફર્ઝ હૈ ઓર નમાઝસે પેહલે યા નમાઝકે બાદ ખુત્બા પઢના સુન્નત હૈ.

ઈદ્દેનકી નમાઝસે પેહલે ગુસ્લ ઓર મિસ્વાક કરનાં, અપને લિબાસમેંસે અસ્થા લિબાસ પહનના, ખુશ્બૂ લગાના, ઈદ્દગાહમેં જાનેસે પેહલે ખજૂરેં યા કોઈ મીઠી ચીઝ ખાના, સફ્કએ ફિત્ર અદા કરકે જાના.

ઈદ્દુલ અઝહામેં નમાઝકે બાદ આકર અપની કુર્બાનીકા ગોશત ખાના.

ઈદ્દગાહમેં ઈદ્દકી નમાઝ પઢના, પૈદલ જાના, એક રાસ્તેસે જાના ઓર દૂસરે રાસ્તેસે આના, ઈદ્દકી નમાઝસે પેહલે ઘરમેં યા ઈદ્દગાહમેં નફ્લ નમાઝ ન પઢના ઓર ઈદ્દકી નમાઝકે બાદ ઈદ્દગાહમેં નફ્લ ન પઢના.

ઈદ્દુલફિત્રમેં આહિસ્તા આહિસ્તા તકબીર કેહતે હુએ જાએ ઓર ઈદ્દુલ-અઝહામેં ઝોર-ઝોરસે તકબીર કેહતે હુએ જાના મુસ્તહબ હૈ.

જનાઝેકી નમાઝકા બયાન :

જનાઝેકી નમાઝ ફર્જે કિફાયા હૈ યા'ની અગર મોહલ્લેકે એક-દો આદમી ભી પઢ લેં તો સબકે ઝિમ્મેસે ફર્જ સાકિત હો જાએગા ઓર કિસીને ભી ન પઢી તો સબ ગુન્હાગાર હોંગે.

જનાઝેકી નમાઝકી શરતેં :

(૧) મૈયતકા મુસલમાન હોના.

(૨) મૈયતકા પાક હોના.

(૩) સત્રકા ઢકા હોના.

(૫) મૈયતકા નમાઝ પઢનેવાલેકે સામને રખા હુવા હોના.

યે શરતેં તો મૈયતકે મુતઅલ્લિક થીં, નમાઝિયોંકે લિયે વહી શરતેં હૈં જો નમાઝકી શરાઈતમેં બયાન કી ગઈ હૈં.

નમાઝે જનાઝાકી તરકીબ યે હૈં :

પેહલે નમાઝકે લિયે સફ્ર બાંધ કર ખડે હોં. અગર આદમી ઝયાદા હોં તો તીન, પાંચ યા સાત સફ્રેં બનાના બહેતર હૈ, જબ સફ્રેં દુરુસ્ત હો જાએં તો ઈસ તરહ નમાઝકી નીચત કરેં :

“મેં ખુદાકે લિયે ઈસ જનાઝેકી નમાઝ ઈસ ઈમામકે પીછે પઢતા હૂં.”

ફિર ઈમામ ઝોરસે ઓર મુકતદી આહિસ્તાસે તકબીર કહેં ઓર હાથ કાનોં તક ઉઠા કર નાફસે નીચે બાંધ લેં ઓર ઈમામ વ મુકતદી આહિસ્તા આહિસ્તા સના પઢેં, ફિર ઈમામ ઝોરસે ઓર મુકતદી આહિસ્તા બગૈર હાથ ઉઠાએ તકબીર કહેં ઓર દોનોં દુરુદ જો નમાઝકે કબૂદએ અખીરહમેં પઢી જાતી હૈં, ઈમામ ઓર મુકતદી આહિસ્તા આહિસ્તા પઢેં. ફિર દૂસરી તકબીરકી તરહ તીસરી તકબીર કહેં ઓર ઈમામ વ મુકતદી આહિસ્તા આહિસ્તા યે દુઆએં પઢેં:

બાલિગ મદદ ઓર ઓરત કે લિયે :

اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِحَيَاتِنَا وَمَيِّتِنَا وَشَاهِدِنَا وَغَائِبِنَا وَصَغِيرِنَا
وَكَبِيرِنَا وَذَكَرِنَا وَأُنْثَانَا. اللَّهُمَّ مَنْ أَحْيَيْتَهُ مِنَّا فَأَحْيِهِ
عَلَى الْإِسْلَامِ وَمَنْ تَوَفَّيْتَهُ مِنَّا فَتَوَفَّهُ عَلَى الْإِيمَانِ.

અલ્લાહુમ્મગફિર લિહૈયિના વ મૈયિતિના વ શાહિદિના વ ગાઈબિના વ
સગીરિના વ કબીરિના વ ઝકરિના વ ઉન્સાના, અલ્લાહુમ્મ મન અહ્યયતહુ
મિન્ના ફ અહ્યિહિ અલલ ઈસ્લામ, વ મન તવફૈતહુ મિન્ના ફ ત વફૈહુ
અલલ ઈમાન. (જામેઅ તિર્મિઝી - ૧૦૨૪)

લડકેકે લિયે :

اللَّهُمَّ اجْعَلْهُ لَنَا فَرْطًا وَاجْعَلْهُ لَنَا أَجْرًا وَذُخْرًا
وَاجْعَلْهُ لَنَا شَافِعًا وَمُشَفَّعًا.

અલ્લાહુમ્મજ અલહુ લના ફ ર તૌ વજૂ અલહુ લના અજરૌવ ઝુખરૌ વજૂ
અલહુ લના શાફિઔ વ મુશફ્ફઆ.

लडकीके लिये :

اللَّهُمَّ اجْعَلْهَا لَنَا فَرْطًا وَاجْعَلْهَا لَنَا جَرًّا وَدُخْرًا
وَاجْعَلْهَا لَنَا شَافِعَةً وَمُشَفَّعَةً

अल्लाहुम्मजअलहा लना इरतौ वजूअलहा लना अजरौव जुभरौ
वजूअलहा लना शाकिऔ व मुशरफतवइइडु अलल ईमान.

ईसके बाद ईमाम जोरसे और मुकतद्दी आहिस्तासे योथी तकबीर
कहे. फिर ईमाम जोरसे और मुकतद्दी आहिस्तासे पेहले दांई तरफ और
फिर बांई तरफ सलाम कर दें. नमाजसे इरिग होते ही जनाजेको उठा
कर ले चलें.

चलते वक्त कलमा शरीफ वगैरह तो दिलमें पढ़ें, आवाजसे पढना
भकडुह है. कब्र और हिसाब-किताब और दुनियाकी बेअे, तेबारीका
ध्यान करें. दिलमें मैयतके लिये मगदिरत और आसानीके लिये दुआ
करते रहें और कब्रस्तान पडोंचकर मैयतको दफन कर दें.

૪. મરણૂંન દુઆએં

दुआ और उसकी अहमियत :

ईस्लाममें दुआकी बड़ी ओहमियत है. उजरत मुहम्मद स.अ.व.ने दुआको ईबादत इरमाया है, बलके अक जगह तो दुआको ईबादतका मगूज बताया है.

उजरत मुहम्मद स.अ.व.का ईशाद यल है के जिसे अल्लाह तआला दुआ मांगनेकी तौफीक देता है उसके लिये रहमतके दरवाजे खुल जाते हैं और 'दुआ मो'मिनका इशियार है, दीनका सुतून है और आसमान व जमीनकी रोशनी है.' (हाकिम)

दुआके अलफाज :

सबसे बेहतर और अख्श तरीका तो यल है के दुआके लिये वल अलफाज ईस्तेमाल किये जाअें जो कुअनिपाक या इदीसोंमें आअे हैं लेकिन दुआके लिये किसी जभानकी केद नहीं है. बंदा अपने आकासे जिस जभानमें याहे दुआ मांग सकता है. कुअनी दुआओं और मसनून दुआओंका मतलब भी याद कर लें और दुआ मांगते वकत उनके मतालिब (मा'नी)को अपने जहनमें रब्बें.

दुआके आदाब :

दुआके लिये कुछ जरूरी आदाब हैं, उनसे अगर गइलत बरती जाअेगी तो दुआओंसे कोई फायदा हासिल नहीं होगा.

(१) दुआके लिये पेहली और एन्तेहाई जरूरी शर्त यल है के बंदेकी पूरी जिंदगी अल्लाहकी ईताअत और उसके रसूलकी इरमांवरदारीके लिये वइइ हो, दूसरोंकी वफादारी और ईताअत और गुलामीका इंधा अपनी गर्दनमें न डाल रब्बा हो.

(२) अपनी रोजीमें इलाल व इराम और जाईज और नाजाईजका पूरा पूरा ખयाल रब्बा हो.

(३) दुआ सिर्फ ખुदासे मांगी जाअे और उसके सिवा किसीको भी अपनी हाजत पूरी करनेके लिये न पुकारें.

(४) पुढासे जो कुछ मांगें उलाल और पाक हो, नाजार्थक मकसद और गुनाहके कामोंके लिये पुढासे हरगिज दुआ न करें.

(५) अल्लाह पर पूरे यकीन और कामिल तरोसेके साथ दुआ मांगें के वह उमारी हर इरियाहकी सुनता है और उम पर महेरबान है.

(६) दुआओंको हर किस्मके शिर्कसे पाक रखें ओर दुआओंमें किसी किस्मकी रियाकारी और दिभावा भी न हो.

(७) दुआ आहिस्ता आहिस्ता और गिडगिडाकर मांगें. इसमें भी दिभावा न हो बल्के दुआमें आजिजी सिर्फ अल्लाहके लिये हो.

(८) दुआ करनसे पेहले कोई नेक अमल जरूर करें.

(९) जब भी मोका मिले हर वक्त पुढाके हुजूरमें दुआ करते रहें, इसलिये के मो'मिनकी शान ही यह है के वह दुःख और भुशीमें, तंगी और भुशहालीमें, मुसीबत और आराममें, तंदुरस्ती और बीमारीमें हर हालमें पुढासे दुआ मांगते रहें.

(१०) दुआकी कुबूलियतका पूरा पूरा यकीन अपने दिलमें रखें. अगर दुआ के असरात जल्दी जाहिर न हों तो मायूस हो कर दुआको हरगिज न छोड़ें.

(११) दुआ मांगते वक्त जाहिरि आदाब या'नी तहारत और पाकीका जरूर प्याल रखें और अपने दिलको भी भुरे जयालातसे पाक रखें.

(१२) पेहले अपने लिये दुआ मांगें फिर दूसरोंके लिये दुआ मांगें.

(१३) दुआ मांगनसे पेहले अल्लाहकी हम्द व सना बयान करें और दुआके अक्वव व आभिरमें नबीअे करीम स.अ.व. पर दुइद पढनेका जरूर अहतेमाम करें.

१. रब्बाना आतिना
किदुदुनिया हसनतव्व व किल
आभिरति हसनतव्व वकिना
अजाबन्नार. (सूर: बकरह - २०१)

۱. رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً

وَوَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا

عَذَابَ النَّارِ ﴿٢٠١﴾ (البقرة: २०१)

૧. અય હમારે રબ હમ્ને દુનિયામેં ભી ભલાઈ દે ઔર આખિરતમેં ભી ભલાઈ દે ઔર આગકે અઝાબસે હમ્ને બચા. (સૂર: બકરહ - ૨૦૧)

૨. રબ્બના લાતુઆખિઝના ઈન્ન સીના અવ અખ્તાના, રબ્બના વ્લા તહ્મિલ અલૈના ઈસરન કમા હમલતહુ અલલ લઝીના મિન કબ્લિના, રબ્બના વલા તુહમ્મિલના માલા તા ક ત લના બિહ, વ આ'હુઅન્ન વગ્ફિર લના વર હમના અન્ત મૌલાના ફન્સૂરના અલલ કલ્મિલ કાફિરીન. (સૂર: બકરહ - ૨૮૬)

૨. رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَا إِنْ نَسِينَا
أَوْ أَخْطَأْنَا رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ
عَلَيْنَا إِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهُ
عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِنَا رَبَّنَا
وَلَا تُحِبِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا
بِهِ ۚ وَاعْفُ عَنَّا وَعِظْ
لَنَا وَارْحَمْنَا إِنَّكَ
مَوْلَانَا فَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ
الْكُفْرِينَ ﴿٢٨٦﴾ (البقرة: ٢٨٦)

૨. અય હમારે રબ હમસે ભૂલ-ચૂકમેં જો કુસૂર હો જાએં ઉન પર ગિરફત ન કર. માલિક ! હમ પર વહ બોઝ ન ડાલ જો તૂને હમસે પેહલે લોગોં પર ડાલે થે. પરવરદિગાર ! જિસ બાર-બોઝ-કો હમમેં ઉઠાનેકી તાકત નહીં હૈ, વહ હમ પર ન રખ. હમારે સાથ નરમી કર, હમસે દરગુઝર ફરમા, હમ પર રહમ કર. તૂ હમારા મૌલા હૈ, કાફિરોંકે મુકાબલેમેં હમારી મદદ કર. (સૂર: બકરહ - ૨૮૬)

૩. રબ્બના લા તુઝિગ કુલૂબના બાઅદ ઈઝ હદયતના વ હબ લના મિલ્લદુન ક રહમહ. ઈન્ન ક અન્તલ વહ્હાબ. (સૂર: આલે ઈમરાન - ૮)

૩. رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوبَنَا بَعْدَ إِذْ
هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ
لَدُنْكَ رَحْمَةً ۚ إِنَّكَ أَنْتَ
الْوَهَّابُ ﴿٨﴾ (آل عمران: ٨)

उ. अय हमारे परवरदिगार ! जब तू हमें सीधे रास्ते पर लगा चुका है तो फिर कहीं हमारे दिलोंको कञ्चपन (टिठेपन)में मुत्तला न कर दीजियो. हमें-
 भजानसे कैजसे रेहमत अता कर, के तू ही ईयाजे लकीकी है. (सूर: आले ईमरान - ८)

४. रब्बना अफ्रिग अलयना
 सबरंव व सब्बित अकदामना
 वन्सुरना अलल कम्मिल
 काफ़िरीन. (सूर: अल बकरह -
 २५०)

४. رَبَّنَا أَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا
 وَثَبِّتْ أَقْدَامَنَا وَانصُرْنَا
 عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ﴿٢٥٠﴾
 (البقرة: २५०)

४. अय हमारे रब ! हम पर सब्रका कैजान कर, हमारे कदम जमा हे
 और धन काफ़िर गिरहों पर हमें इत्त नसीब कर. (सूर: बकरह - २५०)

५. रब्बनग़फ़िर लना जुनूबना
 व ईसराफ़ना ई अमरिना व
 सब्बित अकदामना वन्सुरना
 अलल कम्मिल काफ़िरीन. (सूर:
 आले ईमरान - १४७)

५. رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا
 وَأَسْرَأْنَا فِي أَمْرِنَا وَثَبِّتْ
 أَقْدَامَنَا وَانصُرْنَا عَلَى
 الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ﴿١٤٧﴾ (آل عمران: १४७)

५. अय हमारे रब ! हमारी गलतियों और कोताहियोंसे दरगुजर
 इरमा. हमारे काममें तेरी हुदूदसे जो तजवुज (बाहर निकल जाना) हो
 गया हो उसे मुआफ़ कर दे, हमारे कदम जमा हे और काफ़िरोके मुकाबलेमें
 हमारी मदद कर. (सूर: आले ईमरान - १४७)

६. अन्त वलीयुना इग़फ़िर
 लना वर-हम्ना व अन्त जैरुल
 गाफ़िरीन. व इतुबलना ई हाजि
 डिद्दुन्या हसनताव्व व किल
 आभिरति धन्ना हुदना धलैक.
 (सूर: आ'राफ़ - १५५, १५६)

६. أَنْتَ وَلِيُّنَا فَاغْفِرْ لَنَا
 وَارْحَمْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ
 الْغَافِرِينَ ﴿١٥٥﴾ وَأَكْتُبْ لَنَا فِي
 هَذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي
 الْآخِرَةِ إِنَّا هُنَا أِلَيْكَ ﴿١٥٦﴾
 (الأعراف: १५५)

६. हमारे सरपरस्त तो आप ही हैं, बस हमें मुआफ़ कर दीजिये और हम पर रहम करमाँयये, आप सबसे बढ कर मुआफ़ करमानेवाले हैं, और हमारे लिये धंस दुनियाकी ललाई ली लिख दीजिये और आपिरतकी ली, हमने आपकी तरफ़ रुजूअ कर लिया. (सूर: आ'राफ़ - १५५, १५६)

७. रब्बना आतिना मिललहुन्का रहमतंत्व व हय्यि लना मिन अमरिना र श ढा. (सूर: कहफ़ - १०)

८. رَبَّنَا آتِنَا مِنْ لَدُنْكَ رَحْمَةً وَهَيِّئْ لَنَا مِنْ أَمْرِنَا رَشَدًا (الكهف: १०)

७. अय परवरदिगार ! हमको अपनी रेहमते पाससे नवाज और हमारा मुआमला दुरुस्त कर दे. (सूर: कहफ़ - १०)

८. अलल्लाहि तवकल्ना रब्बना ला तजूअलना कित्ततल लि कम्मिअ् अलिमीन व नजिजना बि रहमितमक मिनल कम्मिल काकिरीन. (सूर: यूनस - ८५, ८६)

९. عَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْنَا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿۸﴾ وَنَجِّنَا بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ﴿۹﴾ (يونس: ८५-८६)

८. हमने अल्लाह पर लरोसा किया, अय हमारे रब ! हमें अलिम लोगोंके लिये कित्ता न बना. और अपनी रेहमतसे हमको काकिरोसे नज्जत दे. (सूर: यूनस - ८५, ८६)

९. रब्बनग़्् किरलना वलि धप्वा निनल्लजि न स बकून बिल धिमान वला तजूअल झी कुलूबिना गिल्लल लिदलजीन आभनूरब्बना धन्नक रउकुंरहीम. (सूर: हश्र - १०)

१०. رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِإِخْوَانِنَا الَّذِينَ سَبَقُونَا بِالْإِيمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِي قُلُوبِنَا غِلًّا لِلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا إِنَّكَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿۱۰﴾ (الحشر: १०)

९. अय परवरदिगार ! हमारे और हमारे उन भाईयोके जो हमसे

પેહલે ઈમાન લાયે હૈં, ગુનાહ મુઆફ ફરમા ઓર મો'મિનોંકી તરફસે હમારે દિલમેં કીના વ હસદ ન પૈદા હોને દે. અય હમારે પરવરદિગાર તૂ બડા શફક્કત કરનેવાલા મહેરબાન હૈ. (સૂર: હશ્ર - ૧૦)

૧૦. લા ઈલાહા ઈલ્લા અન્ત
સુબ્હાનક ઈન્ની કુન્તુ
મિન્ઝાલિમીન. (સૂર: અંબિયા -
૮૭)

૧૦. لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ إِنِّي
كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِينَ ﴿٨٧﴾
(الأنبياء: ٨٧)

૧૦. નહીં હૈ કોઈ ખુદા મંગર તૂ, પાક હૈ તેરી ઝાત, બેશક મૈને કુસૂર કિયા. (સૂર: અંબિયા - ૮૭)

૧૧. અલ્લાહુમ્મા ઈન્ની
અસ્અલુ ક ફિદ્ દુન્યા વલ
આખિરહ. (હદીસ)

૧૧. اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ
فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ (حديث)

૧૧. અય અલ્લાહ મૈં તુઝસે તલબ કરતા હૂં બખ્શિશ ઓર સલામતી દુનિયા ઓર આખિરતમેં. (હદીસ)

૧૨. અલ્લાહુમ્મ ઈન્ની
અસ્અલુક ઈલ્મન નાફિઅન વ
રિઝ્કન તય્યિબન વ અમલન
મુતકબ્બલા. (હદીસ)

૧૨. اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ عِلْمًا
تَافِعًا وَرِزْقًا طَيِّبًا وَعَمَلًا
مُتَقَبَّلًا. (حديث)

૧૨. અય અલ્લાહ ! મૈં તુઝસે તલબ કરતા હૂં ઐસા ઈલ્મ જો મુફીદ હો ઓર પાક રોઝી ઓર ઐસા અમલ જો મકબૂલ હો. (હદીસ)

૧૩. અલ્લાહુમ્મ ઈન્ની
અઊરુબિક મિનલ હમ્મિ વલ
હઝનિ વલ અજઝિ વલ ક સ લિ
વલ જુબનિ વલ બૂખ્લિ વ ઝ લ
ઈદદૈન વ ગ લ બતિરિજલ.

૧૩. اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْهَمِّ
وَالْحَزَنِ وَالْعَجْزِ وَالْكَسَلِ
وَالْجُبْنِ وَالْبُخْلِ وَصَلْحِ
الدَّيْنِ وَعَلْبَةِ الرِّجَالِ.

१३. अय अल्लाह में तेरी पनाह मांगता हूँ आज़िजी, सुस्ती और
 बुजदिलीसे, कंजूसी, कुफ़ और गुनाहसे, जघडे, शोहरतकी ज्वालिह और
 दिभावेसे. (सहीह बुखारी नं. ६३६८)

१४. अल्लाहुम्म धन्नी . ۱۴. اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ ضَعِيْفٌ فَاقْوِيْ
 जधकुन इकत्विनी व धन्नी وَ اِنِّيْ ذَلِيْلٌ فَاعِزِّيْ وَ اِنِّيْ
 जलीलुन इअधज्जानी व धन्नी فَقِيْرٌ فَارْزُقْنِيْ
 इकीरुन इर्रुक्नी.

१४. अय अल्लाह ! में कमजोर हूँ मुझे मजबूत कर, मैं जलील हूँ मुझे
 धज्जत दे और मैं मोहताज हूँ मुझे सामानेजीस्त अता कर.

१५. अल्लाहुम्म धन्नी . ۱۵. اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ
 अउरुबि क मिनलहम्मि वल ह اَلْهَمِّ وَالْحَزَنِ وَصَلْحِ الدِّيْنِ
 ज नि व जलधद्वैनि व ग ल وَ غَلْبَةِ الرِّجَالِ وَالْهَرَمِ
 बतिरिजालि वल ह र मि व وَسُوْءِ الْكِبَرِ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ
 सूधलकिबरि व अउरुबि क मिन اَنْ اُرَدَّ اِلَى اَرْكَلِ الْعُبْرِ
 अन उरददा धला अरजलिल
 उमूर.

१५. अय अल्लाह ! मैं तेरी पनाह मांगता हूँ इक और गमसे,
 कजके भोज और लोगोके दभावसे, बहोत जयादा बुढापे और बुरे बुढापेसे
 और मैं धससे पनाह मांगता हूँ के मैं निकम्मी उमर तक लोटा दिया जाऊँ.